इकाई १

चीनी फेरी वाला (रेखाचित्र) – महादेवी वर्मा

इकाई की रूपरेखा

१.१ लेखक परिचय

१.२ इकाई का सारांश

१.३ संदर्भसहित व्याख्या

१.४ बोध प्रश्न

१.५ लघुत्तरीय प्रश्न

१.१ लेखक का परिचय

महादेवी जी का जन्म २६ मार्च सन् १९०७ ई.में फर्रुखाबाद में हुआ था। उनके पिता प्राध्यापक थे, नाना ब्रजभाषा के कवि थे, माता भक्त हृदय महिला थी। इन सभी के प्रभाव ने महादेवी वर्मा को एक सफल प्राध्यापक व भावुक कवयित्री बना दिया। १९६५ में अवकाश ग्रहण करने के बाद वे पशु-पक्षियों और मनुष्यों की सेवा एवं साहित्य साधना में मगन रहने लगी।

महादेवी जी ने चाँद नामक पत्रिका का संपादन कर उसे प्रतिष्ठित भी किया। इनकी अनेक रचनाएँ समय-समय पर पुरस्कृत होती रही हैं। इन्होंने इलाहाबाद में 'साहित्यकार संसद' नामक संस्था की स्थापना की। इनके साहित्यिक सेवा से प्रभावित होकर इन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया।

महादेवी जी सौम्य, करुणामयी, भावुक-हृदया और वत्सला नारी है। वे चित्रकारिता में भी अपना लोहा मनवा चुकी हैं। वे समाज की यथार्थ स्थितियों को ज्यों का त्यों समाज के सामने रखने में सक्षम रही हैं। सन् १९८३ में उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें एक लाख रुपये का भारत-भारती पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इसी वर्ष उनके काव्य संग्रह 'यामा' के लिए उन्हें डेढ़ लाख रुपए का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

कृतियाँ : महादेवी जी का कृतित्व गुणात्मक दृष्टि से तो समृध्द है ही, किंतु परिणाम की दृष्टि से भी उसका कोई विकल्प नहीं है। इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-

निबंध संग्रहः क्षणदा, श्रृंखला की कडियाँ तथा साहित्यकार की आस्था तथा निबंध।

रेखाचित्र-संग्रहः अतीत के चलचित्र, पथ के साथ, स्मृति की रेखाएँ और मेरा परिवार।

कविता-संग्रहः नीहार, रश्मि, साध्यगीत, यामा और दीपशिखा।

munotes.in

'हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य' में कई काव्यग्रंथों की भूमिकाएँ और कुछ फुटकर आलोचनात्मक व्यक्तित्व दिखाई देता है।

महादेवी जी ने 'चाँद' और 'आधुनिक कवि' नामक पत्रिकाओं का सफल सम्पादन भी किया है।

इनकी मृत्यु ११ सितंबर १९८७ को हुई थी ।

१.२ 'चीनी फेरीवाला' का सारांशः

लेखिका महादेवी वर्मा ने चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र के माध्यम से एक ऐसे बच्चे के रूप रंग, नाक-नक्शा व वेषभूषा का आदि का उल्लेख करती है, जो अपनी अजीविका के लिए विषम परिस्थितियों से जूझते हुए घर-घर जाकर अपने सामने को बेचता है। वह लेखिका के द्वार पर पहुँचकर मइया, माता, जीजी, दिदिया, बिटिया आदि ऐसे संबोधनों का प्रयोग करता है जो लेखिका को प्रिय हैं। इन्हीं से प्रभावित होकर लेखिका उसे अपने द्वार से वापस नहीं जाने देती है। पहले तो लेखिका विदेशी वस्तुओं को देखकर विचलित हो जाती है किंतु बच्चे का यह जवाब कि हम क्या फारन हैं? हम तो चायना से आता है। जो लेखिका को अपने पड़ोसी होने का बोध करा देता है। इससे भावुक होकर जब लेखिका उससे भाई का संबंध जोड़ देती है। तभी लेखिका को याद आता है कि बचपन में उसे उसकी छोटी आँखों के कारण चीनी कहकर पुकारा जाता था। इसके बाद स्थितियाँ एक नई करवट ले लेती हैं। अब लेखिका न चाहते हुए भी एक मेजपोश खरीद लेती है।

इसके पश्चात यह सिलसिला लगातार चल निकलता है। अगले दिन वह लेखिका के लिए ऊदी रंग के डोरे भरे रूमाल को लेखिका के सामने रख देता है। इनमें भर फूलों से लेखिका चीनी नारी की कोमल उँगलियों की कलात्मकता तथा उनके जीवन के अभाव की करुण कहानी को महसूस करती है।

इस फेरीवाले की कहानी भी बड़ी ही मर्म स्पर्शी है। जिसे सुनाने के लिए वह बड़ा ही व्याकुल रहता है। इस वक्त उसे इस बात की बिलकुल भी परवाह नहीं रहती कि उसकी भाषा को कोई समझ पा रहा है या नहीं। वह बतता है कि उसकी माँ उसके जन्म लेते ही इसका सारा बोझ इसकी सात साल की बहन पर छोड़कर चली गई। पिता ने दूसरी शादी कर ली। इसी के साथ इन मातृहीनों की करुण कहनी आरंभ होती होती है। अभी वह पाँच साल का ही हुआ था कि एक दुर्घटना में उसके पिता भी इस संसार से चल बसे।

इसके पश्चात वह देखता है कि उसकी किशोर बहन के समक्ष विमाता द्वारा रखे गए प्रस्ताव को लेकर जब वैमनस्य बढ़ता था तो इसका बदला उससे न लेकर उसके अबोध भाई को कष्ट देकर चुकाया जाता था। उसकी बहन आस-पड़ोस से माँग-माँगकर अपना व अपने भाई पेट भरने लगी। एक रात वह देखता है कि उसकी विमाता बहन की मैली कुचैली देह का काया पलट करने में लगी हुई है। तत्पश्चात

munotes.in

उसे लेकर अंधकार में खो जाती है। और जब प्रातः आँख खुली तो बहन गठरी की तरह भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिन से उसे अच्छा भोजन, कपड़े व खिलौने मिलने लगे।

बहन का संध्या होते ही कायापालट, फिर उसका आधी रात को भारी पैरों लौटना तत्पश्चात विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह बिछौने से उछलकर उसके हाथों से बटुवा छीन लेना आदि क्रम चलने लगा। एक रात जब बहन घर नहीं लौटी तो वह बहन की खोज में घर से निकल पड़ता है। जगह-जगह खोजने के बावजूद उसे बहन तो नहीं मिली किन्तु स्वयं वह गिरहकटों (जेबकतरों) के गिरोह के हाथ लग गया। यहाँ इसे जेबकतरने के सभी गुण सीखाए गए। इस दल में बर्मी, चीनी और स्यामी आदि सभी शामिल थे। जब वह यहाँ से दी गई शिक्षा को व्यवहार में लाने के लिए घर से बाहर निकलता है तो उसकी भेट उसके पिता से परिचित एक व्यापारी से हो जाती है। इस संयोग ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। अब वह कपड़े की दुकान पर व्यापार से संबंधित गुणों को सीखने लगा। इस कला में वह इस प्रकार दक्ष हुआ जिसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। आज वह इस छोटी सी उम्र में ही समझ गया है कि धन संचय से संबंध रखने वाली सभी विद्याएँ एक-सी हैं। कोई इसका संचय प्रतिष्ठापूर्वक कर रहा है तो कोई छिपकर।

इसी बीच चीनी फेरीवाला मालिक के काम से रंगून आ जाता है। दो वर्ष तक कलकत्ता में रहकर अन्य साथियों के संकेत पर उसे इस ओर आने का आदेश मिला। अब वह इसी क्षेत्र में कपड़े के व्यापार को बढ़ा रहा है। वह अपनी दो इच्छाओं को लेकर जीवन जी रहा है जिसमें ईमानदार बने रहना और बहन को ढूँढ निकालना शामिल है। इसमें एक की पूर्ति वह स्वयं करता है और दूसरी के लिए भगवान बुध्द से प्रार्थना करता है।

एक दिन वह लेखिका से कहता है कि वह लड़ने के लिए चाइना जाएगा। वहाँ से बुलावा आया है। जब लेखिका ने उससे पूछा कि तुमने कहा था वहाँ तो तुम्हारा कोई नहीं है फिर बुलावा किसने भेजा तब वह बड़ी सहजता से कहता है कि हम कब बोला हमारा चाइना नहीं है? यह सुन लेखिका स्वयं के प्रश्न पर ही लज्जित हो जाती है और उसके जाने के लिए कुछ पैसों का प्रबंध कर उसे दे देती है। चीनी फेरीवाला खुशी के मारे अपना कपड़ों से भरा गज वहीं छोड़कर चला जाता है।

इस प्रकार लेखिका ने उसके बहन को कभी नहीं देखा था किंतु चीनी फेरीवाले व उसकी बहन के चित्र लेखिका के स्मृति पटल से विस्मृत होने का नाम ही नहीं लेते हैं। इसीलिए चीनी फेरीवाले के गज व कपड़ो को लेखिका ने उसकी निशानी के रूप में अपने घर पर सहेजकर रखा हुआ है।

१.३ संदर्भ सहित व्याख्या

अनुच्छेद : ''जो लोग बाहर विशुध्द खद्दरधारी होते हैं वे भी विदेशी रेशम के थान खरीदकर रखते हैं, इसी से तो देश की उन्नति नहीं होती- तब मैं बड़े कष्ट से हँसी रोक सकी।''

संदर्भ :

प्रस्तुत अंश हमारी पाठ्य पुस्तक गद्य विविधा के चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र से लिया गया है। जिसे महादेवी वर्मा जी ने लिखा है।

प्रसंग :

प्रस्तुत अंश में एक खद्दरधारी भक्त अज्ञानता बस लेखिका पर विदेशी कपड़े रखने का आरोप लगाता है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अंश में लेखिका अपने मुँहबोले भाई की याद को संजोकर रखती है। यह मुँहबोला भाई चीनी फेरीवाला है। जो हमेशा लेखिका के लिए कुछ न कुछ लेकर आता है। जब वह हमेशा के लिए चीन जाने का निश्चय करता है तो लेखिका उसके लिए कुछ रुपयों की व्यवस्था कर देती है। जिससे वह बहुत खुश हो जाता है और अपना कपड़े से भरा गज लेखिका के पास छोड़कर चला जाता है।

लेखिका इस गज में से कुछ कपड़े के थान निकालकर ग्रामीणों के बच्चों के लिए कुर्ते बना-बना कर भेज देती है। जब उसमें सिर्फ तीन थान कपड़े बच जाते हैं तो वह उन्हें चीनी फेरीवाले की यादगार के रूप में अपने अलमारी में रख देती है। लेकिन कुछ दिनों बाद जब एक खद्दर भक्त की नजर इन विदेशी थानों पर पड़ती है तो वह व्यंग्य करते हुए कहता है कि जो लोग खुद को विशुध्द खद्दरधारी कहते हैं वे भी विदेशी रेशम के थान खरीदकर रखते हैं। यह सुन लेखिका अपनी हँसी को रोकने में सफल हो जाती है। लेखिका को चीनी फेरीवाले के अपने घर पहुँचने का सुख महसूस होता है। जो उसे अद्भुत आनंद की अनुभूति कराता है।

विशेष : १. लेखिका का भ्रातृत्व प्रेम दिखाई देता है।

२. स्थितियों को जाने बिगर शक करना अच्छी बात नहीं होती है।

१.४ बोध प्रश्न

प्रश्न : 'चीनी फेरीवाला' रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : अपनी पेट की आग बुझाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ कार्य करना होता है लेकिन उसे इस बात का ध्यान रखना होता है कि उसके कार्यो से किसी का कोई नुकसान न हो। ऐसे कार्य सकारात्मक कार्य कहलाते हैं। ठीक इसी तरह एक चीनी फेरीवाला लेखिका के द्वार पर पहुँचकर मइया, माता, जीजी, दिदिया, बिटिया आदि ऐसे संबोधनों का प्रयोग करता है जो लेखिका को प्रिय हैं। इन्हीं से प्रभावित होकर लेखिका उसे अपने द्वार से निराश होकर वापस नहीं जाने देती है। पहले तो लेखिका विदेशी वस्तुओं को देखकर विचलित हो जाती है किंतु बच्चे का यह जवाब कि हम क्या फारन हैं? हम तो चइना से आता है। जो लेखिका

munotes.in

को अपने पड़ोसी होने का बोध करा देता है। इससे भावुक होकर जब लेखिका उससे भाई का संबंध जोड़ देती है। तभी लेखिका को याद आता है कि बचपन में उसे उसकी छोटी आँखों के कारण चीनी कहकर पुकारा जाता था। इसके बाद स्थितियाँ एक नई करवट ले लेती हैं। अब लेखिका न चाहते हुए भी उससे एक मेजपोश खरीद लेती है।

इस फेरीवाले की कहानी भी बड़ी ही मर्म स्पर्शी है। जिसे सुनाने के लिए वह बड़ा ही व्याकुल रहता है। इस वक्त उसे इस बात की बिलकुल भी परवाह नहीं रहती कि उसकी भाषा को कोई समझ पा रहा हैं या नहीं। वह बताता है कि उसकी माँ उसके जन्म लेते ही इसका सारा बोझ इसकी सात साल की बहन पर छोड़कर चली गई। पिता ने दूसरी शादी कर ली। इसी के साथ इन मातृहीनों की करुण कहानी आरंभ होती होती है। अभी वह पाँच साल का ही हुआ था कि एक दुर्घटना में उसके पिता भी इस संसार से चल बसे।

इसके पश्चात वह देखता है कि उसकी किशोर बहन के समक्ष विमाता द्वारा रखे गए प्रस्ताव को लेकर जब वैमनस्य बढ़ता था तो इसका बदला उससे न लेकर उसके अबोध भाई को कष्ट देकर चुकाया जाता था। उसकी बहन आस-पड़ोस से माँग-माँगकर अपना व अपने भाई का पेट भरने लगी। एक रात वह देखता है कि उसकी विमाता बहन की मैली कुचैली देह का काया पलट करने में लगी हुई है। तत्पश्चात उसे लेकर अंधकार में खो जाती है। और जब प्रातः आँख खुली तो बहन गठरी की तरह भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिन से उसे अच्छा भोजन, कपड़े व खिलौने मिलने लगे बहन का संध्या होते ही कायापालट, फिर उसका आधी रात को भारी पैरों लौटने तत्पश्चात विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह बिछौने से उछलकर उसके हाथों से बटुवा छीन लेना आदि क्रम चलने लगा। एक रात जब बहन घर नहीं लौटती तो वह बहन की खोज में घर से निकल पड़ता है। जगह-जगह खोजने के बावजूद उसे बहन तो नहीं मिली किन्तु स्वयं वह गिरहकटों (जेबकतरों) के गिरोह के हाथ लग गया। यहाँ इसे जेब कतरने के सभी गुण सिखाए गए। इस दल में बर्मी, चीनी और स्यामी आदि सभी शामिल थे। जब वह यहाँ से दी गई शिक्षा को व्यवहार में लाने के लिए घर से बहर निकलता हैं तो उसकी भेंट उसके पिता के परिचित एक व्यापारी से हो जाती है। इस संयोग ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। अब वह कपड़े की दुकान पर व्यापार से संबंधित गुरों को सीखने लगा। इस कला में वह इस प्रकार दक्ष हुआ कि जिसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। आज वह इस छोटी सी उम्र में ही समझ गया है कि धन संचय से संबंध रखने वाली सभी विद्याएँ एक-सी हैं। कोई इसका संचय प्रतिष्ठापूर्वक कर रहा है तो कोई छिपकर।

एक दिन वह लेखिका से कहता है कि वह लड़ने के लिए चाइना जाएगा। वहाँ से बुलवा आया है। जब लेखिका ने उससे पूछा कि तुमने तो कहा था वहाँ तुम्हारा कोई नहीं है फिर बुलावा किसने भेजा तब वह बड़ी सहजता से कहता है कि हम कब

munotes.in

बोला हमारा चाइना नहीं है? यह सुन लेखिका स्वयं के प्रश्न पर ही लज्जित हो जाती है और उसके जाने के लिए कुछ पैसों का प्रबंध कर उसे दे देती है। चीनी फेरीवाला खुशी के मारे अपना कपड़ों से भरा गज वहीं छोड़कर चला जाता है।

इस प्रकार लेखिका देने उसके बहन को कभी नहीं देखा था किंतु चीनी फेरीवाले गज व कपड़ो को लेखिका ने उसकी निशानी के रूप में अपने घर पर सहेजकर रखा हुआ है।

संभावित दीर्घोत्तरी

१. 'चीनी फेरीवाला' नामक रेखाचित्र की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२. 'चीनी फेरीवाला' नामक रेखाचित्र का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'चीनी फेरीवाला' नामक रेखाचित्र में चीनी फेरीवाले की चिंता को अभिव्यक्त कीजिए।

टिप्पणियाँ लिखिए :

चीनी फेरीवाला : चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र के माध्यम से लेखिका एक ऐसे बच्चे के रूप रंग, नाक-नक्शा व वेषभूषा आदि का उल्लेख करती है, जो अपनी अजिविका के लिए विषम परिस्थितियों से जूझते हुए घर-घर जाकर अपने सामान को बेचता है। वह लेखिका के द्वार पर पहुँचकर मइया, माता, जीजी, दिदिया, बिटिया आदि ऐसे संबोधनों से का प्रयोग करता हैं जो लेखिका को प्रिय हैं। इन्हीं से प्रभावित होकर लेखिका उसे अपने द्वार से वापस नहीं जाने देती है। पहले तो लेखिका विदेशी वस्तुओं को देखकर विचलित हो जाती है किंतु बच्चे का यह जवाब कि हम क्या फारन हैं? हम तो चइना से आता है।

चीनी धूल से मटमैले सफेद किरमिच के जूते में छोटे पैर छिपाए रहता था। उसके पतलून व पाजामे का सम्मिश्रित परिणाम जैसा पजामा और कुर्ता पहना होता था। उसके पास कोट की एकता के आधार पर सिला कोट रहता था। उसकी हैट उधड़े हुए किनारों से पुरानेपन की घोषणा करते हुए उसके आधे माथे को ढकी रहती थी। उसकी देह दाड़ी मूछ विहीन दुबली नाटी थी।

जब वह अपने सामान को बेचता है तब उसे इस बात की बिलकुल भी परवाह नहीं रहती कि उसकी भाषा को कोई समझ पा रहा है या नहीं। वह बताता है कि उसकी माँ उसके जन्म लेते ही उसका सारा बोझ उसकी सात साल की बहन पर छोड़कर चली गई। पिता ने दूसरी शादी कर ली। इसी के साथ इन मातृहीनों की करुण कहानी आरंभ होती है। अभी वह पाँच साल का ही हुआ था कि एक दुर्घटना में उसके पिता भी इस संसार से चल बसे।

इसके पश्चात वह देखता है कि उसकी किशोर बहन के समक्ष विमाता द्वारा रखे गए प्रस्ताव को लेकर जब वैमनस्य बढ़ता था तो इसका बदला उससे न लेकर

munotes.in

उससे अबोध भाई को कष्ट देकर चुकाया जाता था। उसकी बहन आस-पड़ोस से माँग-माँगकर अपना व अपने भाई पेट भरने लगी। एक रात वह देखता है कि उसकी विमाता बहन की मैली कुचैली देह का काया पलट करने में लगी हुई है। तत्पश्चात उसे लेकर अंधकार में खो जाती है। और जब प्रातः आँख खुली तो बहन गठरी की तरह भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिन से उसे अच्छा भोजन, कपड़े व खिलौने मिलने लगे।

अब वह कपड़े की दुकान पर व्यापार से संबंधित गुणों को सीखने लगा। इस कला में वह इस प्रकार दक्ष हुआ कि जिसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। आज वह इस छोटी सी उम्र में ही समझ गया है कि धन संचय से संबंध रखने वाली सभी विद्याएँ एक-सी हैं। कोई उसका संचय प्रतिष्ठापूर्वक कर रहा है तो कोई छिपकर।

अब वह इसी क्षेत्र में कपड़े के व्यापार को बढ़ाता है। वह अपनी दो इच्छाओं को लेकर जीवन जी रहा है जिसमें ईमानदार बने रहना और बहन को ढूँढ निकालना शामिल है। इसमें एक की पूर्ति वह स्वयं करता है और दूसरी के लिए भगवान बुध्द से प्रार्थना कराता है।

१.५ लघुत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका की संवेदना।

(ब) खादी भक्त की चिंता।

निम्लिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र किसने लिखा?

उत्तर : महादेवी वर्मा

२. लेखिका ने भाई शब्द का प्रयोग किसके लिए किया?

उत्तर : चीनी फेरीवाले के लिए किया।

३. चीनी फेरीवाला पाकेट में छुपाकर क्या लाया था?

उत्तर : ऊदी रंग के डोरे के फूलों से भरे हुए रुमाल लेकर आया था।

४. फेरीवाले को कौन-कौन सी भाषाएँ आती थी?

उत्तर : चीनी और बर्मी

५. चीनी के संरक्षण की जिम्मेदारी किस पर थी?

उत्तर : उसकी बहन पर।

६. चीनी की माँ की मृत्यु कब हुई?

उत्तर : चीनी को जन्म देते ही।

७. चीनी के अटूट श्रध्दा किसके प्रति है?

उत्तर : अपनी अनदेखी माँ के प्रति।

८. पिता की मृत्यु के समय चीनी कितने वर्ष का था?

उत्तर : पाँच।

munotes.in

इकाई २

जीप पर सवार इल्लियाँ – शरद जोशी

इकाई की रूपरेखा

२.१ लेखक का परिचय

२.२ इकाई का सारांश

२.३ संदर्भसहित व्याख्या

२.४ बोध प्रश्न / दीर्घोत्तरी प्रश्न

२.५ लघुत्तरीय प्रश्न

२.१ लेखक का परिचय

हिन्दी जगत के प्रमुख व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में २१ मई १९३१ को हुआ था। शरद जोशी प्रारंभिक दौर में कुछ समय तक सरकारी नौकरी में कार्यरत रहे लेकिन यहाँ इनका मन अधिक समय तक नहीं लगा। अतः कुछ समय पश्चात इन्होंने नौकरी छोड़कर लेखन को ही अपनी आजीविका का साधन बना लिया। इन्होंने व्यंग्य लेखन, व्यंग्य उपन्यास और व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे। हिन्दी साहित्य जगत में व्यंग्य लेखन को प्रतिष्ठा दिलाने वाले व्यंग्यकारों में शरद जोशी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। इन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में पाई जाने वाली विसंगतियों को बेबाकी से चित्रित किया है।

इनकी प्रमुख कृतियों के अंतर्गत परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, तिलस्म, रहा किनारे बैठ, दूसरी सतह और प्रतिदिन आदि हैं। इनके नाटकों में 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा' हैं। उपन्यास के अंतर्गत मैं, मैं, केवल मैं, उर्फ कमलमुख बी.ए. उल्लेखनीय हैं।

इनकी मृत्यु सन् १९९१ को हुई थी।

२.२ 'जीप पर सवार इल्लियाँ' सारांश :

'जीप पर सवार इल्लियाँ' में व्यंग्यकार शरद जोशी ने नौकरशाही व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होंने इसके अंतर्गत बताया है कि सरकार द्वारा तरह-तरह की योजनाएँ बनाई जाती हैं। जिन पर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च किए जाने होते हैं। इनमें से कुछ योजनाएँ किसानों व फसलों के विकास से संबंधित होती है। जिन्हें समय रहते किसानों तक पहुँचाना सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों की जिम्मेदारी है।

munotes.in

व्यंग्यकार बताना चाहते हैं कि आजकल अखबारों में चने पर इल्ली नामक कीड़े का लगना सुर्खियों पर है। यहाँ तक की चने के पौधे पर बैठी इल्ली की तस्वीर भी छपकर आ गई है। इसके चलते सरकार व सरकारी महकमे की पोल खुलकर रह गई है। इसी बीच लेखक अपने एक बुध्दिमान मित्र से मिलता है और उनके बीच इल्ली को लेकर चर्चा होती है। वे इला और इल्ली में अंतर बताते हुए कहते हैं कि 'इला' अन्न की अधिष्ठात्री देवी है अर्थात पृथ्वी। 'इल्ली' अन्न की नष्टार्थी देवी। साथ ही यह भी बताया कि ये इल्ली इसी इला की बेटियाँ हैं। और अपनी माँ की कमाई खा रही हैं। तभी लेखक की पुत्री इल्ली संबंधी ज्ञान का परिचय देते हुए कहती है कि 'प्राकृतिक विज्ञान' भाग चार में बताया गया है कि इल्ली से तितली बनती है। तितली जो फूलों पर मडराती हैं रस पीती है और उड़ जाती हैं।

इसी दौरान अखबारों के शोर के चलते नेताओं के भाषण शुरू हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप सरकार जागी, मंत्री जागे, अफसर जागे और फाइलें खुलने लगी। नीद में झूमते अधिकारी व कार्यकर्ता घर से बाहर निकल आए और गाँवों की ओर बढ़ने लगे। इस प्रकार इल्ली का मामला दिल्ली तक पहुँच गया। दिल्ली से आदेश पहुँचते ही खेतों में दवा का छिड़काव करने के लिए हवाई जहाजों की व्यवस्था की गई। हेलीकॉप्टर मॅडराने लगे। किसान आश्चर्य चकित हुए। विपक्ष ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि यदि खेतों में हवाई जहाज द्वारा इसी प्रकार दवा का छिड़काव होता रहा तो उनकी जड़ें साफ होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी। लेकिन कुछ समझदार लोगों पर इस चहलकदमी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं। वे जानते है कि इलेक्शन के दौरान इस तरह की चहल कदमी होती ही रही है।

आगे लेखक बताते हैं कि एक दिन इल्ली-उन्मूलन की प्रगति हेतु कृषि-अधिकारी आते हैं। इस दौरे में लेखक के मित्र ने लेखक को भी साथ ले लिया। लेखक को भी अपनी शंका का समाधान करना था कि चने के खेत होते हैं या पेड़। रास्ते भर मनुष्य की प्रकृति के अनुकूल लेखक का मित्र आगंतुक अधिकारी से अपने विभाग के अन्य अधिकारियों की बुराइयाँ करता है। जब वे चने के खेत पर पहुँचते हैं तो देखते हैं कि चने के खेत के पास एक छोटा अफसर इनका इंतजार कर रहा है। आज लेखक को पता चलता है कि चने के पेड़ नहीं बल्कि खेत होते हैं।

इसके बाद बड़ा अधिकारी छोटे अफसर से खेतों का मुआइना करते हुए जो भी प्रश्न पूछता है वह उसकी हा में हा मिलाता रहता है। जैसे

इस खेत में तो इल्लियों नहीं हैं? बड़े अफसर ने पूछा।

जी नहीं हैं। छोटा अफसर बोला।

कुछ तो नजर आ रहीं हैं।

जी हाँ, कुछ तो हैं। आदि। इसी तरह की बातों के पश्चात बड़ा अधिकारी हुक्म देता हैं मुझे चना चाहिए हरा। छोटा अफसर जी हाँ कहते ही एक किसन को डराते

धमकाते हुए कहता है कि जरा हरा-हरा चना छाँटकर साहब की जीप पर रखवा दे। कुछ ही देर में जीप पर चने का ढेर बन गया और हमारे रवाना होते ही किसान ने राहत की साँस ली और हम तीनों चना खाने लगे। तब एकाएक मुझे लगा जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं जो खेतों की ओर से चली जा रही हैं। तब लेखक को एहसास होता है कि देश में ऐसी ही लाखों इल्लियाँ हैं जो सिर्फ चना ही नहीं खा रही हैं बल्कि देश का सब कुछ डकार लेना चाहते हैं।

इस प्रकार लेखक ने देश में व्यप्त भ्रष्टाचार को व्यंगात्मक प्रस्तुति के साथ देशवासियों के समक्ष रखने का प्रयास किया है। साथ ही समस्त राजनेता, अधिकारी व कर्मचारियों की कार्य पध्दति की पोल खोलकर रख दी है।

२.३ **संदर्भसहित व्याख्या :**

अनुच्छेद :

''अखबारों में शोर हुआ कि चने में इल्ली लग गई है और सरकार सो रही है वगैरह।''

संदर्भ :

प्रस्तुत अंश हमारी पाठ्य पुस्तक गद्य विविधा के 'जीप पर सवार इल्लियाँ नामक व्यंग्य से लिया गया है। जिसे शरद जोशी जी ने लिखा है।'

प्रसंग :

प्रस्तुत अंश के माध्यम से व्यंग्यकार ने सरकारी कामकाज की पोल खोलकर रख दी है।

व्याख्या :

व्यंग्यकार इस अंश के माध्यम से बताना चाह रह है कि बरसात के मौसम के आने व ठंड बढ़ जाने पर हमारा सरकारी महकमा घर पर आराम करने करने लगता है। इस दौरान समय बिताने के लिए वह अपने सहकर्मियों को हुक्म देते हैं उनके घर पर हरे चने पहुँचा दिए जाएँ। किसान तक यह सूचना पहुँचते ही डर के मारे वह स्वयं अपने खेतों के हरे चने इनके घरों तक पहुँचा देते हैं और अधिकारी वर्ग अखबारों के माध्यम से यह चर्चा चला देते हैं कि चने के खेतों पर इल्लियाँ लग गई हैं ताकि किसानों के नाम पर कुछ राहत पैकेज निकाला जा सके और उसमें से भी अपना कमीशन निकाला जा सके।

इस प्रकार लेखक ने सामाजिक व्यवस्था की लगातार विकृत होती नीतियों पर चिंता व्यक्त की है। और समाज को आगाह किया कि यदि समय रहते इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो ये समाज के तथाकथित रक्षक ही समाज के भक्षक बन जाएँगे।

munotes.in

विशेष :

१. व्यंग्यकार ने देश के किसानों की स्थिति को अभिव्यक्ति दी है।

२. देश के नेताओं, नौकरशाहों व अखबारों की कार्य पध्दति का पर्दा फाश किया है।

२.४ बोध प्रश्न

प्रश्न १ 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए ।

उत्तर : 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य के माध्यम से शरद जोशी जी ने एक तरफ देश के विकास की बागडोर सम्भाले हमारे राजनेताओं व सरकारी अधिकारियों की कार्यपध्दति का पर्दा फाश किया है तो दूसरी तरफ किसानों की यथार्थ स्थिति को अभिव्यक्त किया है। तीसरी ओर लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहे जाने वाले मीडिया की भी पोल खोलकर रख दी है।

व्यंग्यकार बताना चाहते हैं कि आज देश के जिम्मेदार लोग किस प्रकार अपने कर्तव्य से मुँह मोड़ लेने व किसानों की आड़ में समाज का पैसा चट करने की योजनाएँ बना लेने में माहिर हो जाते हैं। व्यंग्यकार बताना चाहते हैं कि आजकल अखबारों में चने पर इल्ली नामक कीड़े का लगना सुर्खियों पर है। यहाँ तक की चने के पौधे पर बैठी इल्ली की तस्वीर भी छपकर आ गई है। इसके चलते सरकार व सरकारी महकमे की पोल खुलकर रह गई है। यह पूरा एक नाटकीय प्रकरण के समान चलता है। इसी बीच लेखक अपने एक बुध्दिमान मित्र से मिलता है और उनके बीच इल्ली को लेकर चर्चा होती है। वे इला और इल्ली में अंतर बताते हुए कहते हैं कि 'इला' अन्न की अधिष्ठात्री देवी है अर्थात पृथ्वी। 'इल्ली' अन्न की नष्टार्थी देवी। साथ ही यह भी बताया कि ये इल्ली इसी इला की बेटियाँ हैं। और अपनी माँ की कमाई खा रही हैं। तभी लेखक की पुत्री इल्ली संबंधी ज्ञान का परिचय देते हुए कहती है कि 'प्राकृतिक विज्ञान' भाग चार में बताया गया है कि इल्ली से तितली बनती है। तितली जो फूलों पर मडराती हैं रस पीती हैं और उड जाती हैं।

अब अखबारों के शोर के चलते नेताओं के भाषण शुरू हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप सरकार जागी, मंत्री जागे, अफसर जागे और फाइलें खुलने लगी। नींद में झूमते अधिकारी व कार्यकर्ता घर से बाहर निकल आए और गावों की ओर बढ़ने लगे। इस प्रकार इल्ली का मामला दिल्ली तक पहुँच गया। दिल्ली से आदेश पहुँचते ही खेतों में दवा का छिड़काव करने के लिए हवाई जहाजों की व्यवस्था की गई। हेलीकॉप्टर मॅडराने लगे। किसान आश्चर्य चकित हुए। विपक्ष ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि यदि खेतों में हवाई जहाज द्वारा इसी प्रकार दवा का छिड़काव होता रहा तो उनकी जड़ें साफ होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी। लेकिन कुछ समझदार लोगों पर इस चहलकदमी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वे जानते है कि इलेक्शन के दौरान इस तरह की चहल कदमी होती ही रही है।

munotes.in

कुछ समय पश्चात एक दिन इल्ली-उन्मूलन की प्रगति हेतु कृषि-अधिकारी आते हैं। इस दौर में लेखक के मित्र ने लेखक को भी साथ ले लिया। लेखक को भी अपनी शंका का समाधान करना था कि चने के खेत होते हैं या पेड़। रास्ते भर मनुष्य की प्रकृति के अनुकूल लेखक का मित्र आगंतुक अधिकारी से अपने विभाग के अन्य अधिकारियों की बुराइयाँ करता है। जब वे चने के खेत पर पहुँचते हैं तो देखते हैं कि चने के खेत के पास एक छोटा अफसर इनका इंतजार कर रहा है। तब लेखक देखता है कि चने के पेड़ नहीं बल्कि खेत होते हैं।

इसके बाद बड़ा अधिकारी छोटे अफसर से खेतों का मुआइना करते हुए जो भी प्रश्न पूछता है वह उसकी हा में हा मिलाता रहता है। जैसे इस खेत में तो इल्लियाँ नहीं हैं ? बड़े अफसर ने पूछा।

जी नहीं हैं। छोटा अफसर बोला।

कुछ तो नजर आ रहीं हैं।

जी हाँ, कुछ तो हैं। आदि। इसी तरह की बातों के पश्चात बड़ा अधिकारी हुक्म देता है मुझे चना चाहिए हरा। छोटा अफसर जी हाँ कहते ही एक किसान को डराते धमकाते हुए कहता है कि जरा हरा-हरा चना छाँटकर साहब की जीप पर रखवा दे। कुछ ही देर में जीप पर चने का ढेर बन गया और हमारे रवाना होते ही किसान ने राहत की साँस ली और हम तीनों चना खाने लगे। तब एकाएक मुझे लगा जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं जो खेतों की ओर से चली जा रही हैं। तब लेखक को एहसास होता है कि देश में ऐसी ही लाखों इल्लियाँ हैं जो सिर्फ चना ही नहीं खा रही है बल्कि देश का सब कुछ डकार लेना चाहते हैं।

इस प्रकार लेखक का उद्देश्य देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के विविध आयामों की ओर आम जनता का ध्यान आकृष्ट करना है। वह देशवासियों के समक्ष समाज की यथार्थ स्थिति को रखने का प्रयास करता है। साथ ही हमारे भ्रष्ट राजनेता, अधिकारी व कर्मचारियों की कार्य पध्दति की पोल खोलकर रख देता हैं।

संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न :

१. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य में लेखक की चिंता को अभिव्यक्त कीजिए।

टिप्पणियाँ लिखिए :

इल्ली का परिचय :

इल्ली एक प्रकार का चने में लगने वाला कीड़ा होता है। व्यंग्यकार ने जब से एक तरफ यह सुना था कि 'समधन तेरी घोड़ी चने के खेत में' और दूसरी तरफ

munotes.in

'चने के झाड़ में चढ़ने वाली बात'। तब से व्यंग्यकार हमेशा इस दुविधा में रहता था कि चने का पेड़ होता है या पौधा। तभी अखबारों की सुर्खियों में चने में इल्ली के लगने की चर्चा जोर पकड़ लेती है।

इसी बीच लेखक अपने एक बुध्दिमान मित्र से मिलता है और उनके बीच इल्ली को लेकर चर्चा होती है। वे इला और इल्ली में अंतर बताते हुए कहते है कि 'इला' अन्न की अधिष्ठात्री देवी है अर्थात पृथ्वी। 'इल्ली' अन्न की नष्टार्थी देवी। साथ ही यह भी बताया कि ये इल्ली इसी इला की बेटी है और बेटी अपने माँ की कमाई खा रही है। तभी लेखक की पुत्री इल्ली संबंधी ज्ञान का परिचय देते हुए कहती है कि 'प्राकृतिक विज्ञान' भाग चार में बताया गया है कि इल्ली से तितली बनती है। तितली जो फूलों पर मडराती हैं रस पीती है और उड़ जाती हैं। इन सारी बातों को लेकर लेखक और भी दुविधा में आ जाता है।

तभी लेखक अपने एक मित्र के पास पहुँच जाते हैं जो कृषि–विभाग में अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। उसी दौरान लेखक के मित्र को अपने एक अधिकारी को लेकर चने के खेतों का मुआइना करने जाना पड़ता है। लेखक भी उनके साथ हो लेते हैं। वहाँ पहुँचने पर वे देखते हैं कि किस प्रकार सरकारी दफ्तरों में छोटे अधिकारी अपने बड़े अधिकारी को खुश करने के लिए उसकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। और अंत में बड़ा अधिकारी अपने घर के लिए हरे चने लदवा लेता है। अब तीनों गाड़ी में बैठकर उन चनों को खाने लगते हैं। तभी लेखक को एहसास हो जाता है कि इल्ली खेतों में नही हैं बल्कि उनके प्रतीक गाड़ी में बैठे ये ऑफिसर ही हैं। जो किसान को डरा धमकाकर उसकी मेहनत पर सेंध लगा देते हैं।

२.५ लघुत्तरी प्रश्न

१. कृषि–अधिकारियों का रवैया।

२. अखबारों के समाचार का प्रभाव।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** वाक्य में दीजिए।

(१) चने के क्या होते हैं?

उत्तर : पौंधे।

(२) अखबारों में किन बातों को लेकर शोर हो रहा था?

उत्तर : कि चने में इल्ली लगी है और सरकार सो रही है।

(३) लेखक की पुत्री ने इल्ली के संबंध में कौन सी बात बताई?

उत्तर : इल्ली से तितली बनती है।

(४) लोग इल्ली का जिक्र किस प्रकार कर रहे थे?

उत्तर : जैसे कि वह पड़ोस में रहती हो।

(५) इला और इल्ली में क्या अंतर है?

उत्तर : इला अन्न की अधिष्ठात्री देवी है और इल्ली अन्न की नष्टात्री देवी।

(६) छोटे अफसर ने किसान से साहब की जीप में क्या रखने को कहा?

उत्तर : हरा-हरा चना।

(७) लेखक के अनुसार जीप पर कितनी इल्लियाँ सवार थी?

उत्तर : तीन

(८) मैथिलीशरण गुप्त की ग्राम जीवन पर लिखी कविता बड़े अफसर ने किस कक्षा में पढ़ी थी?

उत्तर : आठवीं।

munotes.in

इकाई ३

भोर का तारा (एकांकी) – जगदीशचंद्र माथुर

इकाई की रुपरेखा

३.१ इकाई का उद्‌देश्य

३.२ लेखक का परिचय

३.३ प्रस्तावना

३.४ रचना का सारांश

३.५ संदर्भ सहित व्याख्या

३.६ बोध प्रश्न

३.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न/लघुत्तरी प्रश्न

३.१. इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई द्वारा लेखक श्री जगदीशचंद्र माथुर के व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं एवं लेखन शैली का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
- इसी इकाई में 'भोर का तारा' एकांकी का सारांश स्पष्ट होगा।
- एकांकी से संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं बोध प्रश्नों की जानकारी भी हो सकेगी।
- एकांकी से संबंधित लघूत्तरी प्रश्न भी दिये गए हैं।

३.२ लेखक परिचय– श्री जगदीशचन्द्र माथुर

श्री जगदीशचन्द्र माथुर का जन्म १६ जुलाई १९१७, खुर्णा, बुलंदराहर जिला, उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा खुर्जा में हुई तथा उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। प्रयाग विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण और प्रयाग के साहित्यिक संस्कार रचनाकार के व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। १९३९ में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. (अंग्रेजी) करने के बाद १९४१ में (इंडियन सिविल सर्विस) में चुन लिए गए। जगदीश चन्द्र माथुर सृजनात्मक प्रतिभा के धनी थे। अध्ययन काल से ही उनका लेखन प्रारंभ होता है। उनका निधन १४ मई १९७८ में हुआ।

३.३ प्रस्तावना

जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रेम को स्वच्छंद रूप में चित्रित किया गया है। 'भोर का तारा' एकांकी १९४६ में प्रयाग लिखी गई। 'भोर का तारा' एकांकी

में कवि शेखर की भावुकता पर्यावरण में घटित करने अथवा रचने का मोह भी प्रारंभ से मिलता है। इसमें कवि और राजनीतिज्ञ की महत्ता को वर्णित किया गया है। इसमें कर्तव्य और भावना के संयोग द्वारा आदर्श की स्थापना की गयी है।

३.४ 'भोर का तारा' एकांकी का सारांश :

'भोर का तारा' एकांकी में श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने कवि और राजनीतिज्ञ की महत्ता को स्थापित किया है। शांति के अवसर पर श्रृंगार में डूबे रहनेवाले वीर सैनिक युध्द के नगाड़े बजते ही केसरिया बाना पहन कर युध्द के लिए तैयार हो जाता है। वैसे ही कवि या रचनाकार दोहरा व्यक्तित्व रखता है।

गुप्त साम्राज्य की राजधानी उज्जयिनी में एक साधारण कवि का गृह।

कवि शेखर का गृह। सब वस्तुएँ अस्त-व्यस्त बाई ओर एक तख्त पर मैली फटी हुई चादर बिद्दी है। उस पर एक चौकी भी रखी है और लेखनी इत्यादि भी। इधर-उधर भोजपत्र (या कागज) बिखरे हुए पड़े हैं। एक तिपाई भी है जिस पर कुछ पात्र रखे हुए हैं।

यह एकांकी कर्तव्य और भावना के संयोग द्वारा आदर्श को स्थापित करती है। इसमें शेखर, माधव व छाया तीन मुख्य पात्र है। शेखर और माधव दोस्त हैं। दोनों में वार्तालाप होता है। छाया शेखर की प्रियतमा है। कवि फूल से भी कोमल भावमयी कविता रचकर सपनों का संसार निर्मित करता है, किंतु अवसर या प्रसंग आने पर बज्र से भी कठोर लिखकर, सैनिकों को प्रोत्साहित कर देश की सुरक्षा में योगदान देता है। अतः कवि राजनीतिज्ञ अथवा सैनिक से भी श्रेष्ठ साबित होता है। भोर का तारा एकांकी में प्रेमी जीवन की मानसिकता पर भी सवाल उठाया गया है।

छाया साधारण कवि शेखर के कला की पुजारिन और प्रियतमा भी है। माधव शेखर से प्रार्थना करता है कि वह अपनी ओजमयी कविता से गाँव-गाँव जाकर वह आग फैला दे, जिससे हजारों लाखों भुजाये अपने सम्राट और देश की रक्षा के लिए शस्त्र हाथ में ले ले। शेखर का भावुक हृदय परिवर्तित हो जाता है। वह अपने कर्तव्यपथ को समझ जाता हैं।

छाया को माधव वह यह बात बहुत चुभती है किन्तु शेखर को उसके प्यार से दूर ले जाने के वजह से माधव को डाटती है। छाया के अनुसार- 'अत्यंत पीड़ित स्वर में माधव तुमने वह नारी सुलभ स्वभाव से कुछ तो मेरा प्रभात नष्ट कर दिया।' वह विचलित हो जाती है। छाया शेखर के काव्य और प्रेम के प्रति इतनी अधिक स्वार्थी हो जाती है कि वह अपने कर्तव्य को भूल जाती है। माधव के अनुसार 'छाया मैंने तुम्हारा प्रभात नष्ट नहीं किया। प्रभात तो अब होगा, शेखर अब तक भोर का तार था अब प्रभात का सूर्य होगा'

माधव के समझाने पर छाया मस्तक उठाती है और अपने प्रेम की कर्तव्य के लिए बलिदान कर देती है। अपने पति की प्रतिष्ठा व अपने देश की सुरक्षा के लिए अपने हृदय को कठोर बना लेती है।

३.५ संदर्भ सहित व्याख्या

कविता तुम्हारे सूने दिलो में संगीत भरती है, स्त्री भी तुम्हारे अब हुए मन को बहलाती है। पुरूष जब जीवन की सूखी चट्टानों पर चढ़ता-चढ़ता थक जाता है तब सोचता है चलो थोड़ा मन बहलाव ही कर लें।

संदर्भ :

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। इसके रचयिता श्री जगदीशचन्द्र माथुर हैं। यह एकांकी 'गद्य विविधा' पुस्तक में संकलित हैं। इसका संपादन हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने किया है।

प्रसंग :

इन पंक्तियों में कवि, कविता और स्त्री के संबंधो का चित्रण किया गया है।

स्पष्टीकरण :

श्री जगदीशचंद्र माथुर ने 'भोर का तारा' एकांकी में कर्तव्य और भावना के संयोग को स्थापित किया है। उपर्युक्त पंक्ति में शेखर-छाया के प्रति अपनी कोमल भावनाओं को प्रकट करता है। शेखर कहता है कि छाया तुम बताओ तुम्हारे गान, तुम्हारी प्रेरणा, तुम्हारे प्रेम के बिना मेरी कविता क्या होती? छाया के कथनानुसार कविता सूने दिलो में संगीत भरती हैं। स्त्री कवि या पुरुष के ऊबे हुए मन को बहलाती है। पुरूष के जीवन में जब नीरसता आती है तब वह मन बहलाव की सोचता है। स्त्री पर अपना सारा प्यार, अपने सारे अरमान निछावर कर देता है।

विशेष :

१. उपर्युक्त पंक्तियो की भाषा सहज और सरल है।
२. कवि, कविता और स्त्री के संबंध का चित्रण है।
३. कवि के कर्तव्य की भावना का चित्रण है।
४. कवि शेखर साधारण से असाधारण की यात्रा करता है।

३.६ बोध प्रश्न

१. 'भोर का तारा' एकांकी का सारांश स्पष्ट कीजिए?
२. कवि शेखर की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए?
३. 'भोर का तारा' एकांकी में कवि और राजनीतिज्ञ की महत्ता स्थापित की गई है। इसकी समीक्षा कीजिए?
४. 'भोर का तारा' एकांकी में कर्तव्य और भावना के संयोग द्वारा आदर्श को प्रतिष्ठित किया गया है। इस पर प्रकाश डालिए।

munotes.in

३.७ **वस्तुनिष्ठ प्रश्न / लघुत्तरी प्रश्न**

१. ‘भोर का तारा’ एकांकी के लेखक कौन हैं?

उत्तर : ‘भोर का तारा’ एकांकी के लेखक श्री जगदीशचन्द्र माथुर हैं।

२. शेखर का दोस्त कौन है?

उत्तर : शेखर का दोस्त माधव है।

३. शेखर की प्रियतमा कौन है?

उत्तर : शेखर की प्रियतमा छाया है।

४. छाया के अनुसार प्रत्येक पुरुष के लिए स्त्री क्या है?

उत्तर : छाया के अनुसार प्रत्येक पुरूष के लिए स्त्री एक कविता है।

५. शेखर के अनुसार उसके और छाया के प्रेम की अमर स्मृति क्या है?

उत्तर : शेखर के अनुसार उसके और छाया के प्रेम की अमर स्मृति ‘भोर का तारा’ रचना है।

६. कौन सा साम्राज्य संकट में है?

उत्तर : गुप्त साम्राज्य संकट में है।

७. छाया किसकी बहन है?

उत्तर : छाया देवदत्त की बहन है।

८. तोरमाण ने कौन सी नदी पार की?

उत्तर : तोरमाण ने सिन्धु नदी पार की।

९. शेखर के अनुसार कवि अपनी कविता कब सुनाता है।

उत्तर : शेखर के अनुसार कवि अपनी कविता सुबह के समय सुनाता है।

१०. माधव के अनुसार शेखर भोर का तारा था, उसके बाद वह क्या बनेगा?

उत्तर : माधव के अनुसार शेखर भोर का तारा था उसके बाद वह प्रभात का सूर्य बनेगा।

munotes.in

इकाई ४

तुफान के विजेता (रिपोर्ताज) – रांगेय जाधव

इकाई की रूपरेखा

४.१ इकाई का उद्देश्य

४.२ लेखक का परिचय

४.३ प्रस्तावना

४.४ रचना का सारांश

४.५ संदर्भ सहित व्याख्या

४.६ बोध प्रश्न

४.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न / लघुत्तरी प्रश्न

४.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई द्वारा लेखक श्री रांगेय राघव के व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं एवं लेखन शैली का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
- इसी इकाई में 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज का सारांश स्पष्ट होगा।
- रिपोर्ताज से संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं बोध प्रश्नों की जानकारी भी हो सकेगी।
- रिपोर्ताज से संबंधित लघूत्तरी प्रश्न भी दिए गए हैं।

४.२ लेखक का परिचय– रांगेय राघव

रांगेय राघव का जन्म १७ जनवरी, १९२३ में आगरा में हुआ। पिताश्री रंगाचार्य के पूर्वज लगभग तीन सौ वर्ष पहले जयपुर और फिर भरतपुर के बयाना कस्बे में आकर रहने लगे। रांगेय राघव का जन्म हिन्दी प्रदेश में हुआ। उन्हें तामिल और कन्नड़ भाषा का भी ज्ञान था। रांगेय राघव की शिक्षा आगरा में हुई थी। १९४९ में आगरा विश्वविद्यालय से गुरू गोरखनाथ पर शोध करके उन्होंने पीएच.डी. की थी।

रांगेय राघव हिन्दी के प्रगतिशील विचारों के लेखक थे, किंतु मार्क्स के दर्शन को उन्होंने संशोधित रूप में ही स्वीकार किया। उनका निधन ३१ वर्ष की उम्र में मुंबई में सन् १९६२ में हुआ।

munotes.in

मुख्य कृतियाँ –

भारती का सपूत, लखिया की आँखे, देवकी का बेटा एवं रिपोर्ताज आदि।

४.३ प्रस्तावना

रांगेय राघव ने १३ वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया। १९४२ में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा के बाद एक रिपोर्ताज लिखा– तूफान के विजेता। इसमें लेखक अकाल में जो क्षति ग्रस्त हो चुका है उसका ही वर्णन नहीं करता बल्कि जो बाकी बचा है वह किस अवस्था में है इसका भी स्पष्टीकरण करता है।

४.४ रचना का सारांश / तूफान के विजेता

'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज रांगेय राघव द्वारा रचित है। इसमे बंगाल मे पड़े भीषण अकाल के बाद वहाँ की दयनीय स्थिति एवं विभीषिका का वर्णन किया गया है। उन्होंने उस क्षेत्र का दौरा किया था। यह अकाल प्राकृतिक आपदा से अधिक मनुष्य द्वारा निर्मित आपदा भी। लालची, षड़यन्त्रकारी व्यापारियों के स्वार्थ के कारण इस आपदा ने भीषण रूप धारण किया। ६० लाख लोग काल का ग्रास बन गए। जो बच गए वे कुपोषण और महामारियों का शिकार होने लगे।

बंगाल के भीषण अकाल का वर्णन संक्षेप में किया जाना सम्भव नहीं है। 'तुमने पूछा है बंगाल की अब क्या हालत है? एक दो लफ्जो में पूरी बात खत्म हो जाये ऐसे 'अव्य इति' में कहकर बात समाप्त कर देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है।

रचनाकार भुँइयापाड़ा गाँव का चित्रण करते हुए कहते है कि वहाँ ३०० में से १५० आदमी मर गए तो क्या तुम वहाँ की स्थिति का ठीक-ठाक जायजा ले सकोंगे। वहाँ मलेरिया, चेचक, कालाबाज़ार, हैजा जैसी भयंकर महामारियो ने अकाल के बाद लोगों को धर दबोचा है। लेखक बंगाल के लोगों की दयनीय अवस्था का वर्णन करते हुए कहते हैं कि लोग दवा के पैसे न होने के कारण झाड़-फूँक करवा लेते हैं। मौत के गर्त में समा भी जाते हैं। हर तरफ गंदगी फैली हैं। उनके (लेखक के) अनुसार इस स्थिति में राजनीति पार्टियाँ एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने के अलावा कुछ नहीं करती। लेखक मछुओं के एक गाँव का वर्णन करता है जहाँ अकाल ने भयंकर तबाही मचायी है। वहाँ के लोग अशिक्षित, गँवार हैं या यह भी कि जीवन की इस भयंकर स्थिति में हर चीज उनके मन में शंका पैदा करती है। अतः हिन्दुस्तान से आए डॉक्टरों के बारे में उन्हें भ्रम होता है कि ये सरकारी एजेन्ट है कि हमें मारने आए हैं। डॉ. कुथटे जो डॉक्टरी जत्थे के लीडर थे उन्होंने सुना और कहा-वाह भाई, क्रांतिकारी और यह रोज बढ़ती हुई मरीजों की मौत पर अधिक काम ही करते थे।

जिंदगी की भयावहता ने भय का भाव मिटा दिया है। सरकारी तंत्र से ज्यादा मजदूरों ने सहायता की। अंत में डॉक्टर फिर चिन्तामग्न हो गया। लड़के सहमे से

लेटे रोशनी की तरफ एकटक देख रहे थे। बदनामी का ही नहीं, किसी की मौत का डर दिल में समा गया था। सच्चा डॉक्टर तब तक नहीं खाता जब तक मरीज की ओर से उसे कुछ विश्वास न हो जाये।

भारतीय संस्कृति महान है। किसी भी तूफान में फँसी मानवता की नाव बचाने में बंगाल समर्थ है।

४.५ संदर्भ सहित व्याख्या

''वह एक नीला तहमद पहने है और गाँव के अधिकांश आदमी अर्धनग्न हैं। घर वैसे ही टूटे हैं, कोई-कोई बिल्कुल नष्ट हो गये हैं, यहाँ तक कि बाँस तक बाकी नहीं हैं।''

संदर्भ :

उपर्युक्त पँक्तियाँ 'तूफान के विजेता' रिपार्ताज से ली गई हैं। इसके लेखक रांगेय राघव हैं। यह रिपोर्ताज 'गद्य विविधा' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया हैं।

प्रसंग :

इन पंक्तियों में लेखक ने बंगाल के एक गाँव का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया हैं। बंगाल में अकाल के बाद गाँव की भीषण दशा का रिपोर्ताज में वर्णन हैं।

स्पष्टीकरण :

श्री रांगेय राघव ने 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में मछुओं के गाँव का चित्रण प्रस्तुत किया हैं। जिसे अकाल ने अपनी चपेट में ले लिया है और तहस-नहस कर दिया हैं। गाँव के घर टूट-फूट गए हैं। वे पूरी तरह ध्वस्त हो गए हैं यहाँ तक कि बाँस का कोई टुकड़ा तक नहीं दिखाई पड़ता। गाँव के लोग अर्धनग्न तथा असहाय हैं। हरी-हरी छायादार पगडंडियाँ केवल फूलों से लदे तालाबों के किनारे बसे नग्न घरों के पैरो को चूमती रहती हैं।

विशेष :

१. मानव जीवन अनमोल है।
२. लेखक अकाल की विभीषिका का वर्णन करता है।
३. उपर्युक्त पंक्ति की भाषा सहज, सीधी, सरल और प्रभाव पूर्ण हैं।
४. लेखक का चित्रण मार्मिक है।

४.६ बोध प्रश्न

१. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
२. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में बंगाल के अकाल की विभिषिका का वर्णन है। इस पर प्रकाश डालिए?

३. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज की भाषा सहज, सीधी व सरल है। इसकी समीक्षा कीजिए।

४. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए, बंगाल के अकाल में मनुष्य की जीजीविया का चित्रण कीजिए?

४.७ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज मे किस प्रदेश के अकाल का वर्णन है।

उत्तर : 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में बंगाल के अकाल का वर्णन है।

२. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में कौन से गाँव का चित्रण है?

उत्तर : 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में भुँइयापाड़ा गाँव का चित्रण है।

३. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में कौन जेल में है?

उत्तर : 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज में सुशील घोष और निखिलदास जेल में है।

४. 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज के लेखक कौन हैं?

उत्तर : 'तूफान के विजेता' रिपोर्ताज के लेखक रांगेय राघव हैं।

५. किस संस्था ने अकाल में मदद की?

उत्तर : रामकृष्ण मिशन संस्था ने अकाल में मदद की।

६. डॉक्टरी जत्थे के लिडर कौन थे?

उत्तर : डॉक्टरी जत्थे के लीड़र डॉ. कुथटे थे।

७. किनकी विधवा शेष हैं?

उत्तर : नेपाल और कालचंद की विधवा शेष हैं।

८. दस हजार आदमियों का प्रतीक क्या है?

उत्तर : दस हजार आदमियों का प्रतीक एक हड्डी का लड़का है।

९. कौन मील भर भी नहीं चल सकता?

उत्तर : माँ मील कर भी नहीं चल सकती।

१०. डॉक्टर कब तक नहीं खाता?

उत्तर : सच्चा डॉक्टर तब तक नहीं खाता जब तक मरीज की ओर से उसे कुछ विश्वास न हो जाये।

munotes.in

इकाई ५

नये देश, नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान (आत्मकथ्य)

– सुषमावेदी

इकाई की रूपरेखा

५.१ लेखक का परिचय

५.२ प्रस्तावना

५.३ रचना का सारांश

५.४ संदर्भ सहित व्याख्या

५.५ बोध प्रश्न

५.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न / लघुत्तरी प्रश्न

५.१ लेखक का परिचय– सुषमा बेदी

सुषमा बेदी का जन्म १ जुलाई १९४५ को पंजाब के फिरोजपुर नामक शहर में हुआ। इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली से १९६४ में बी.ए., १९६६ में एम.ए. एवं १९६८ में दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल.की डिग्री तथा १९८० में पंजाब युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी के समकालीन कथा और उपन्यास साहित्य में यह एक जाना-माना नाम हैं।

मुख्य कृतियाँ – हवन, लौटना, नवाभूम की रस कथा (उपन्यास) तथा चिड़िया और चील, सड़क की लय और अन्य कहानियाँ आदि।

५.२ प्रस्तावना

'नया देश', नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान' आत्मकथ्य में सुषम बेदी ने ब्रुसेल्स का चित्रण किया है। वे कहती है कि 'ब्रुसेल्स पहुँच कर मैंने महसूस किया कि एकदम नयी जगह पर जाना एक तरह से बहुत कुछ सीखने का ही अवसर होता है। उस सीखने को चाहे इन्सान खुश होकर ले या मुसीबत माने।'

वहाँ की संस्कृति, वहाँ के तौर के तथा अपने साथ बच्चों के परवरिश का भी चित्रण किया गया है।

५.३ रचना का सारांश

'नया देश', नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान' (आत्मकथ्य) के शीर्षक

से ही लेखिका ने अपनी पूरी कहानी को अभिव्यक्त किया है। ब्रुसेल्स में पहुँचकर वे अपने जीवन की नई शुरूवात करती है। भारतीय संस्कार और ब्रुसेल्स के संस्कार में जमीन-आसमान का अंतर है। देखा जाए तो इन्सान जवान होता है तो नया पत स्वागत योग्य होता है। बड़ी उम्र में हम अपनी जीवन शैली और आदतों के इतने दास हो चुके होते हैं कि नही नयापन बोझ महसूस होने लगता है।

सुषम बेदी इस परिवर्तन को सहज रूप में स्वीकार करती हैं। अभी जीवन के दूसरे दशक में ही थी और हर नयी चीज के प्रति उत्साह था। इसी से बहुत सारे हादसों के बीच से गुजरते हुए भी उसका सुखद पक्ष कष्टों से बचाता रहा। देखा जाए तो ब्रुसेल्स पहुँचने के पहले दिन ही अजीब सी घटना घटी। वरूण और पुरवा उनके बच्चे। उसमें से पुरवा ने १० पैसे का सिक्का निगल लिया। पुरवा साल भर की हुई थी और वह उम्र ऐसी होती है कि बच्चा हर चीज मुँह में ही डालकर परखता है।

सुषम बेदी कहती है कि- 'दर असल मेरा सबसे बड़ा इम्तिहान अब घर सम्भालना था और बच्चों की सही देख भाल। दोनो ही कामो में नौसिखिया थी और मदद करनेवाला हुजूम भी नही था जो कि भारत में मुहैया था। बच्चों के साथ घर देखभाल और खाना बनाना भी मेरे लिए नये अनुभव थे।'

उस समय वहाँ भारत के राजदूत के.बी.लाल थे। उनकी पत्नी ने भारतीय महिलाओं की संस्था बना दी थी जिससे कि वे आपस में मिलती रहें। सुनीति कुमार उस संस्था की जान थी। सुषम जी संस्था की सोशल सेक्रेटरी थी। हम लोग कुछ न कुछ कार्यक्रम करते रहते। कभी गाने-बचाने तो कभी फैशन शो का। भारतीय रहन-सहन और विदेशी रहन-सहन बिल्कुल भिन्न।

यूरोप में गर्मी का समय सचमुच बहुत आनन्दमय होता है। पूरा का पूरा देश छुट्टी मना रहा होता है। सूरज यहाँ खुशी का प्रतीक है। सूरज की गर्मी यहाँ जलाती नहीं, मरहम ही लगाती है, दुलराती, पुचकारती है। बुसेल्स की खूबी यह थी कि वहाँ से पश्चिमी यूरोप के सारे देश बहुत पास पड़ते हैं। इस जीवन में होनेवाले अनुभवों ने अपने आपको जानने के भी मौके दिए। हर समाज अपने ढंग से व्यक्ति को आकर देता है और बाहरी व्यक्ति को शौक भी दे सकता है या नये को समझने का अवसर भी।

भाषा अपने आप में संस्कार है। वरूण स्कूल जाते ही बहुत जल्दी से फ्रेंच सीख गया, नहीं तो वह हिन्दी ही बोलता था। पुरवा ने तो बोलना ब्रुसेल्स में आकार ही सीखा था। शायद अपने बच्चों के अध्यापक बनने का काम मैंने कभी नहीं किया।

हिन्दी को एक भाषा के रूप में पढ़ाने का काम ब्रुसेल्स में ही शुरू किया था। मैंने कई भारत पर शोध करनेवाले बेल्जियम के छात्र हिन्दी सीखने के बहुत इच्छुक थे। पढ़ाने के अलावा ब्रुसेल्स से मैं नवभारत टाइम्स के लिए संवाददाता के रूप में काम भी करने लग गयी थी। ब्रुसेल्स के निवास के दिनों ही मेरी पहली कहानी 'जमी बर्फ का कवच' श्रीपतराय द्वारा संपादित कहानी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

सुषम बेदी के आत्मकथ्य में उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन है।

५.४ संदर्भ सहित व्याख्या / स्पष्टीकरण

'भारत से बाहर आकर और यूरोप की सर्दी झेलकर सूरज की कीमत पता लगती है। सूरज यहाँ खुशी का प्रतीक है। सूरज की गर्मी यहाँ जलाती नहीं, मरहम ही लगाती है, दुलाराती, पुचकारती है।'

संदर्भ :

उपर्युक्त पंक्तियाँ (नया देश, नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान, ('आत्मकथ्य') से ली गई हैं। इसकी लेखिका सुषम बेदी हैं। यह आत्मकथ्य 'गद्य विविधा' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने किया है।

प्रसंग :

इन पंक्तियों में यूरोप के मौसम और सूरज के महत्त्व को चित्रित किया गया है।

स्पष्टीकरण :

यूरोप में गर्मी का समय सचमुच बहुत आनन्दमय होता है। पूरा का पूरा देश छुट्टी मना रहा होता है। धूप सेक रहा होता है। सूरज की किरणे सभी के चेहरे एकदम से रौशन कर देती हैं। भारत में भारत का महत्व नहीं मालूम होता, भारत के बाहर बार-बार भारत की याद आना स्वाभाविक है। वहाँ सूये के महत्त्व को प्रतिपादित किया जाता है। अतः भारत से बाहर आकर और यूरोप की सर्दी झेलकर सूरज की कीमत पता लगती है। सूरज यहाँ खुशी का प्रतीक है। सूरज की गर्मी यहाँ जलाती नहीं, मरहम ही लगाती है, दुलाराती, पुचकारती है। फूलों में रंग भर देती है, हरियाली में चमक ला देती है।

विशेष :

१. आत्मकथ्य की भाषा सहज है।

२. सूरज के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

३. भारत की महत्ता चित्रित है।

४. सुषम बेदी ने आत्मकथ्य के माध्यम से अपने अनुभव वर्णित किए हैं।

५.५ बोध प्रश्न

१. 'नया देश, नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान' आत्मकथ्य का सारांश लिखिए।

२. आत्मकथ्य में भारतीय व विदेशी संस्कृती का चित्रण है । इसकी समीक्षा कीजिए।

३. ब्रसेल्स की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

४. ब्रुसेल्स में हिन्दी भाषा के प्रभाव का चित्रण कैसे हुआ है? आत्मकथ्य के आधार पर प्रकाश डालिए?

५.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१. 'नया देश, नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान' आत्मकथ्य की लेखिका कौन हैं?

उत्तर : 'नया देश, नयी जमीन, नये क्षितिज, नये आसमान' आत्मकथ्य की लेखिका सुषम बेदी है।

२. आत्मकथ्य में कहाँ का चित्रण हैं?

उत्तर : आत्मकथ्य में ब्रुसेल्स का चित्रण है।

३. सुषम बेदी के बच्चों का क्या नाम है?

उत्तर : सुषम बेदी के बच्चों का नाम है वरूण और पुरवा।

४. १० पैसे का सिक्का कौन निगल गया?

उत्तर : १० पैसे का सिक्का पुरवा ने निगल लिया था।

५. भारत के राजदूत कौन थे?

उत्तर : भारत के राजदूत के. बी. लाल थे।

६. सूरज कहाँ खुशी का प्रतीक है?

उत्तर : सूरज यूरोप में खुशी का प्रतीक है।

७. कहाँ का समुद्रतट बहुत सुन्दर था?

उत्तर : फ्रेंच अभिनेत्री ब्रिजिट बारदो के गाँव सैंट तोपे का समुद्रतट बहुत सुन्दर था।

८. 'जमी बर्फ का कवच' कहानी की लेखिका कौन हैं?

उत्तर : 'जमी बर्फ का कवच' कहानी की लेखिका सुषम बेदी है।

९. कहाँ जानवर को साथ न ले जाने की मनाही है?

उत्तर : अमेरिका में जानवर को साथ न ले जाने की मनाही है।

१०. सुषम बेदी किस समाचार पत्र की संवाददाता बनी?

उत्तर : सुषम बेदी 'नवभारत टाइम्स' समाचार पत्र की संवाददाता बनी।

munotes.in

इकाई ६

आचरण की सभ्यता (निबंध) – अध्यापक पूर्ण सिंह

इकाई की रूपरेखा

६.१. इकाई का उद्देश्य

६.२ लेखक का परिचय

६.३. प्रस्तावना

६.४ रचना का सारांश

६.५. संदर्भ सहित व्याख्या

६.६. बोध प्रश्न

६.७. वस्तुनिष्ठ प्रश्न / लघुत्तरी प्रश्न

६.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई द्वारा लेखक अध्यापक पूर्ण सिंह के व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं एवं लेखन शैली का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
- इसी इकाई में 'आचरण की सभ्यता' निबंध का सारांश स्पष्ट होगा।
- निबंध से संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं बोध प्रश्नों की जानकारी भी हो सकेगी।
- निबंध से संबंधित लघूत्तरी प्रश्न भी दिये गए हैं।

६.२ लेखक का परिचय /अध्यापक– पूर्ण सिंह

अध्यापक पूर्ण सिंह का जन्म १७ फरवरी १८८१ को पश्चिम सीमाप्रांत (अब पाकिस्तान) के हज़ारा जिले के मुख्य नगर एबटाबाद के समीप सलहद ग्राम में हुआ था। १८९९ में डी. ए. वी. कॉलेज, लाहौर, २८ सितम्बर, १९०० को वे टोकयो विश्वविद्यालय जापान के फैकल्टी ऑफ मेडिसिन में औषधि निर्माण संबंधी रसायन का अध्ययन करने के लिये 'विशेष छात्र' के रूप में प्रविष्ट हो गए और वहाँ उन्होंने पुरे तीन वर्ष तक अध्ययन किया। १९०१ में टोकयो के 'ओरिएंटल क्लब' में भारत की स्वतंत्रता के लिए सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से पूर्णसिंह ने कई उग्र भाषण दिए तथा कुछ जापानी मित्रों के सहयोग से भारत–जापानी क्लब की स्थापना की। ३१ मार्च, १९३१ को देहरादून में उनका देहांत हो गया।

मुख्य कृतियाँ – सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम तथा अमेरिका का मस्ताना योगी वाल्ट हिक्ट मैन आदि।

munotes.in

६.३ प्रस्तावना

'आचरण की सभ्यता' निबंध में अध्यापक पूर्ण सिंह ने सभ्यता के बारे में चित्रण किया है। वह आचरण की सभ्यता पर विशेष बल देते हैं। जिस तरह हर देश की एक सभ्यता होती है, ठीक उसी प्रकार हर व्यक्ति के आचरण की भी एक सभ्यता होती है। विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से भी आचरण की सभ्यता अधिक ज्योतिष्मती है। आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है।

६.४ निबंध/रचना का सारांश

'आचरण की सभ्यता' निबंध में अध्यापक पूर्ण सिंह ने आचरण की महत्ता को चित्रित किया है। आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल आदमी राजाओं के दिलों पर भी अपना प्रभुत्व जमा सकता है। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है। व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता हुआ भी राग के सुर के भीतर पड़ा है। मृदु वचनों की मिठास में आचरण की सभ्यता मौन रूप से खुली हुई है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सब के सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है। उसकी आत्मा एक अंग हो जाता है।

न काला, न नीला, न पीला, न सफेद, न पूर्वी, न पश्चिमी, न उत्तरी, न दक्षिणी, बे-नाम, बे-निशान, बे-मकान, विशाल आत्मा के आचरण से मौन रूपिणी, सुगन्धि सदा प्रसारित हुआ करती है, इसके मौन से प्रसूत प्रेम और पवित्रता-धर्म सारे जगत का कल्याण करके विस्तृत होते है।

आचरण की सभ्यता अथवा मौनरूपी व्याख्यान महत्ता इतनी बलवती, इतनी अर्थवती और इतनी प्रभाववती होती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा, क्या साहित्य भाषा और क्या अन्य देश की भाषा सब की सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है।

लेखक के अनुसार प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलो की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल स्थित संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है, न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, न इंजील से, न कुरान से, न धर्मचर्चा से, न केवल सत्संग से, जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है। आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊँचे कलश वाला मंदिर है। पुस्तकों में लिखे हुए नुस्खों से तो और भी अधिक बदहजमी हो जाती है। ईश्वरीय मौन शब्द और भाषा का विषय नहीं।

मनुष्य का जीवन इतना विशाल है कि उसमें आचरण को रूप देने के लिए नाना प्रकार के ऊँच-नीच और भले-बुरे विचार, अमीरी और गरीबी, उन्नति और

अवनति इत्यादि सहायता पहुँचाते हैं। नेत्र-रहित को सूर्य से क्या लाभ कविता, साहित्य, पीर, पैगंबर, गुरू, आचार्य, ऋषि आदि के उपदेशो से लाभ उठाने का यदि आत्मा में बल नहीं तो उनसे क्या लाभ जब तक यह जीवन का बीज पृथ्वी के मल-मूत्र के ढेर में पड़ा है।

आचरण का विकास जीवन का परमोद्‌देश्य है। जब तक निर्धन पुरुष पाप से अपना पेट भरता है तब तक धनवान पुरुष के शुध्दाचरण की पूरी परीक्षा नहीं। इसी प्रकार जब तक अज्ञानी का आचरण अशुध्द है तब तक ज्ञानवान के आचरण की पूरी परीक्षा नहीं तब तक जगत में आचरण की सभ्यता का राज्य नहीं। आचरण की सभ्यता का देश ही निराला है। उसमें न शारीरिक झगड़े हैं, न मानसिक, न आध्यात्मिक, न उसमें विद्रोह है, न जग ही का नामोनिशान है और न वहाँ कोई उँचा है, न नीचा। न कोई वहाँ धनवान है और न ही कोई वहाँ निर्धन। जिस समय आचरण की सभ्यता संसार में आती है उस समय नीले आकाश से मनुष्य को वेद-ध्वनि सुनायी देती है। चारों तरफ शिव ही शिव है।

६.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

'आचरण की सभ्यता' का देश ही निराला है। उसमें न शारिरीक झगड़े है, न मानसिक, न आध्यात्मिक। न उसमें विद्रोह है, न जंग ही का नामोनिशान है और न वहाँ कोई उँचा है, न नीचा।

संदर्भ :

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'आचरण की सभ्यता' निबंध से ली गई हैं। इसके लेखक अध्यापक पूर्ण सिंह जी हैं। यह निबंध 'गद्य विविधा' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने किया है।

प्रसंग :

इन पंक्तियों में लेखक ने सभ्यता और उसके विभिन्न रूपों का चित्रण करते हुए आचरण की सभ्यता की महत्ता का वर्णन किया है।

स्पष्टीकरण :

'आचरण की सभ्यता' निबंध में लेखक अध्यापक पूर्ण सिंह ने आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल आदमी राजाओं के दिलों पर भी अपना प्रभुत्व जमा सकता है तथा आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। आचरण की सभ्यता का देश ही निराला है। उसमें न शारीरिक झगड़े है, न मानसिक, न आध्यात्मिक न उसमें विद्रोह है, न जंग ही का नामोनिशान है, और न वहाँ कोई उँचा है, न नीचा। न कोई वहाँ धनवान है और न ही कोई वहाँ निर्धन।

विशेष :

१. लेखक ने आचरण की महत्ता प्रतिपादित की है।

२. उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा सहज व सरल है।

३. आचरण की सभ्यता में सब एक समान होते हैं।

४. आचरण की सभ्यता का देश निराला है।

६.६ बोध प्रश्न :

१. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

२. 'आचरण की सभ्यता'मय भाषा सदा मौन रहती है। इस कथन की समीक्षा कीजिए?

३. 'आचरण का विकास जीवन का परमोउद्देश्य है।' इस पर प्रकाश डालिए।

४. 'आचरण की सभ्यता' का देश ही निराला है। इसे स्पष्ट कीजिए।

६.७ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न :

१. 'आचरण की सभ्यता' निबंध के लेखक कौन हैं?

उत्तर : 'आचरण की सभ्यता' निबंध के लेखक अध्यापक पूर्ण सिंह हैं।

२. 'आचरण की सभ्यतामय' भाषा सदा कैसी रहती है?

उत्तर : 'आचरण की सभ्यतामय' भाषा सदा मौन रहती है।

३. आचरण के मौन व्याख्यान से किसको एक नया जीवन प्राप्त होता है?

उत्तर : आचरण के मौन व्याख्यान से मनुष्य को एक नया जीवन प्राप्त होता है।

४. हिमालय की तरह एक ऊँचे कलश वाला मंदिर कौन है?

उत्तर : आचरण हिमालय की तरह एक ऊँचे कलशवाला मंदिर है।

५. किसका विकास जीवन का परमोद्देश्य है?

उत्तर : आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश्य है।

६. किससे अधिक बदहजमी हो जाती है?

उत्तर : पुस्तको में लिखे हुए नुसखो से अधिक बदहजमी हो जाती है।

७. 'आचरण की सभ्यता' का देश कैसा है?

उत्तर : 'आचरण की सभ्यता' का देश निराला है।

८. प्रेम की भाषा कैसी है।

उत्तर : प्रेम की भाषा शब्दरहित है।

९. आलस्य क्या है?

उत्तर : आलस्य मृत्यु है।

१०. पुष्पवत कौन खिलते जाते हैं?

उत्तर : नर-नारी पुष्पवत खिलते जाते हैं।

munotes.in

इकाई ७

अस्थियों के अक्षर (संस्मरण) – श्यौराज सिंह बेचैन

इकाई की रुपरेखा

७.१ इकाई का उद्‌देश्य

७.२ लेखक का परिचय

७.३ प्रस्तावना

७.४ रचना का सारांश

७.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

७.६ बोध प्रश्न

७.७ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

७.१ इकाई का उद्‌देश्य :

- इस इकाई द्वारा लेखक श्यौराज सिंह 'बेचैन' के व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं एवं लेखन शैली का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
- इसी इकाई में 'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण का सारांश स्पष्ट होगा।
- संस्मरण से संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं बोध प्रश्नो की जानकारी भी हो सकेगी।
- संस्मरण से संबंधित लघूत्तरी प्रश्न भी दिये गए हैं।

७.२ लेखक का परिचय/श्यौराज सिंह 'बेचैन' :

श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपना परिचय स्वंय दिया है। उनके अनुसार – 'मैं उत्तर प्रदेश के एक बहुत ही पिछड़े हुए गांव नन्दरौली (बदायूं) में पैदा हुआ था। मेरे पूर्वज के काम करने के लिए मुर्दा मवेशी उठाना, उनका चमड़ा उतारना, उसको शुद्ध करके समाज के लिए उपयोगी बनाना, यह सब कियद करने का था। लेकिन आप देख सकते हैं कि इस तरह के दुर्घटना के कारण जो मेरे बचपन को एक संकट की स्थिति मे डाल दिया गया था। मतलब जब मैं लगभग ५–६ साल का था एक दुर्घटना में मेरे पिताजी की मृत्यु हो गयी। माँ अशिक्षित थी। मेरे बाबा का एक पैर टूट चुका है उनके छोटे भाई नबीना थे मेरे ताओ जी नेत्रहीन थे। उस स्थिति में हम बेघर हो गए और उसी समय से मेरी यात्रा दूसरे के सहारे शुरू हो गयी।'

अखबारो में लेखन का काम छात्र जीवन से शुरू हुआ और पत्रिकाओं में मेरी कविता छपती शुरू हुई।

७.३ प्रस्तावना :

'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण में श्यौराज में श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपने स्कूली जीवन का चित्रण किया है। उनके जीवन का संघर्ष जब लेखक वर्णित है। 'घटना करीब तीस वर्ष पहले की है। पाल मुकीमपुर के प्राव्यत्रिक विद्यालय में सौतेले भाई रूपसिंह के साथ पढ़ने जाने लगा था, पहली किताब के सारे अक्षर पढ़ गया था।'

७.४ रचना का सारांश :

'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण में श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगो को चित्रित किया है। बचपन का प्रसंग, जीवन का संघर्ष एवं जीवन की प्रेरणा आदि।

घटना करीब ३० वर्ष पहले की है, जब लेखक पाल मुकीमपुर के प्रथमिक विद्यालय में सौतेले भाई रूप सिंह के साथ पढ़ने जाने लगा था, पहली किताब के सारे अक्षर पढ़ गया था। रुप सिंह मुझसे डेढ़-दो साल बड़ा था लेकिन हम दोनो का दाखिला एक साथ एक ही कक्षा में किया गया था। साल भी नहीं गुजरा होगा, तब तक एक और मोड़ इस घटना में आया, हुआ यह कि रूपसिंह पहली किताब के अक्षर भी याद नहीं कर पाया।

लेखक के अनुसार - 'शिक्षक की यह रिपोर्ट सुनकर, भिखारीलाल के तीनों भाई बहुत चिन्तित हुए, उन दिनों मेरी 'माँ' भिखारीलाल की दूसरी पत्नी के रुप में थी और छोटेलाल और डालचंद कुँवारे थे, इनमें छोटेलाल तो आजीवन कुँवारे ही रहे। उस दिन मास्टर जी के बयान ने घर में हालात खराब कर दिए, तीनों भाइयों को खाने-पीने की चिन्ता से ज्यादा इस बात की चिन्ता ने झटका दिया की उनका रूपसिंह पढ़ने में कमजोर है। आपका बड़ा लड़का बुध्दि से बड़ा नहीं है, उम्र से बड़ा है, वह पढ़ भी सकता है, दोनों को एक ही क्लास में चला पाना सम्भव नहीं है। यह सुनकर तीनों भाई घर आए और रुपसिंह के भविष्य को लेकर चिन्तित होने लगे। भिखारीलाल और 'माँ' में अक्सर झगड़ा होता रहता था।

भिखारी जिद्दी और गन्दी गालियाँ देने में नम्बर वन आदमी था।

दोनों एक-दूसरे के बेटे के अकल्याण की भविष्यवाणियाँ करने लगे, बस्ती के कुछ लोगों को बुरा लगा कि नहीं पढ़ाना था तो नहीं पढ़ाता, मगर किताबे-पट्टियाँ चूल्हे पर रखकर जला देना कहाँ की समझदारी है, पर ये है ही बुरा आदमी कहकर लोग अपने-अपने घर चले गए। दो-तीन दिन तक मुझे अक्षरों के दर्शन नहीं हुए, बस्ती के दो-तीन और लड़के मेरे साथ के थे। मैं लुक-छिपकर उनकी किताब में

बने 'क' से कबूतर, 'ख' से खरगोश, 'ग' से गधा पढ़ आता। सौ तक गिनती याद थी, परन्तु भिखारी को यह भी बुरा लगा, जब उसे पता चला कि मैं दूसरों के घर जाकर बच्चों के साथ रहता हूँ। मैं हर दिन यह जुगाड़ देख रहा था कि कहीं से चार-छह आना पैसे हाथ लगे तो मैं एक किताब खरीद लूँ।

समय चल रहा था। उन दिनों दिवाली के आसपास पाली में जुआ बहुत खेला जाता था। चाचा ने तुरन्त मेरा हाथ पकड़ा और घर की ओर वापस हुए। चलते-चलते वे बता रहे थे। उल्ला को एक रुपया का उसने जेब में से निकाला था। से उवा ने घर में उध्दम कारि रखौ है। घर आम रास्ते से थोड़ा भीतर गली में था। जब में रुपया चुराकर गया था, उन्हें काम करते छोड़ गया था, चाचा के साथ लौटा तो देखा- मेरी माँ कसाई द्वारा काटी जा रही 'गाय' की तरह जोर-जोर से चीख रही थी। उल्ला तू राक्षस है। भिखरिया, तूने तो अपनी बऊको मारीं ही, डल्ला से क्यों पिटवाया। उस घटना के बाद करीब बारह साल छात्र के रूप में मैने किसी भी विद्यालय का मुँह नहीं देखा।

करीब २० साल बाद जब मैंने ग्रैजुएशन कर लिया था तो जल्दी नौकरी पाकर मैं माँ की वह घटना बताने की उत्सुकता में था। किंतु माँ नहीं थी। लेखक ने अपने किए की माफी तक माँग न पाए।

लेखक ने अपने संघर्ष, अपनी माँ और अन्य घटनाओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

७.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

'आपका बड़ा लड़का बुध्दि से बड़ा नहीं है, उम्र से बड़ा है, वह पढ़ भी सकता है, दोनों को एक ही क्लास में चला पाना सम्भव नहीं है, तुम स्कूल भेजते रहना चाहते हो। तो शौक से भेजो, पर अगली कक्षा में श्यौराज ही जाएगा, रुपसिंह नहीं।'

संदर्भ :

उपर्युक्त पंक्तियों 'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण से ली गई हैं। इसके लेखक श्यौराज सिंह 'बेचैन' हैं। यह संस्मरण 'गद्य विविधा' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने किया है।

प्रसंग :

इन पंक्तियों में लेखक अपने बचपन के समय के संघर्ष और सौतेले भाई रुपसिंह की पढ़ाई के संबंध में चर्चा करते हैं।

स्पष्टीकरण :

'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण में लेखक श्यौराज सिंह 'बैचेन' अपने बचपन के संघर्ष को चित्रित करते हैं। घटना करीब ३० वर्ष पहले की हैं, जब लेखक पाल मुकीमपूर के प्राथमिक विद्यालय में सौतेले भाई रूप सिंह के साथ पढ़ने जाते थे। मास्टरजी ने समझाया आपका बड़ा लड़का बुध्दि से बड़ा नहीं है, उम्र से बड़ा है, वह पढ़ भी सकता है, दोनों को एक ही क्लास में चला पाना सम्भव नहीं है, तुम स्कूल भेजते रहना चाहते हो तो शौक से भेजो, पर अगली कक्षा में श्यौराज ही जाएगा, रूपसिंह नहीं। यह सुनकर तीनों भाई घर आए और रूपसिंह के भविष्य को लेकर चिन्तित होने लगे।

विशेष :

१. उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा सहज और सरल है।

२. लेखक ने अपने बचपन का चित्र प्रस्तुत किया है।

३. शिक्षा को लेकर पिता के द्वारा बेटे की शिक्षा पर चिंता व्यक्त की गई है।

४. श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने संस्मरण को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है।

७.६ बोध प्रश्न :

१. 'अस्थियो के अक्षर' संस्मरण का सारांश अपने शब्दों में लिखिए?

२. संस्मरण द्वारा श्यौराज सिंह 'बैचेन' ने अपने बचपन के संघर्ष को चित्रित किया है। इस पर प्रकाश डालिए।

३. लेखक और उनके भाई रुप सिंह का चरित्र चित्रण संस्मरण के आधार पर कीजिए।

४. लेखक के माँ का मार्मिक रूप वर्णित किया है। इसकी समीक्षा कीजिए।

७.७ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न :

१. 'अस्थियो के अक्षर' संस्मरण के लेखक कौन हैं?

उत्तर : 'अस्थियो के अक्षर' संस्मरण के लेखक श्यौराज सिंह 'बेचैन' हैं।

२. लेखक के सौतले भाई का क्या नाम हैं?

उत्तर : लेखक के सौतले भाई का नाम रूप सिंह है।

३. कौन कुँवारे थे?

उत्तर : छोटेलाल और डालचंद कुँवारे थे।

४. पाली में बाप को क्या कहा जाता है?

उत्तर : पाली में बाप को 'दादा' कहा जाता है।

५. बुद्धि से कौन बड़ा नहीं था?

उत्तर : बुद्धि से रूपसिंह बड़ा नहीं था।

६. जुआ कौन खेलता था?

उत्तर : जुआ डालचंद खेलता था।

७. जूतियाँ बनाने की दुकान किसकी थी?

उत्तर : जूतियाँ बनाने की दुकान भिखारी लाल की थी।

८. लेखक की माँ के मुँह में पानी किसने डाला?

उत्तर : लेखक की माँ के मुँह में पानी बीरबल बाबा की घरवाली ने डाला।

९. लेखक की बहन का क्या नाम है।

उत्तर : लेखक की बहन का नाम मायादेवी है।

१०. लेखक के पिता कौन हैं?

उत्तर : लेखक के पिता भिखारीलाल हैं।

munotes.in

इकाई ८

चित्रलेखा (उपन्यास) – भगवतीचरण वर्मा

इकाई की रुपरेखा

८.१ लेखक परिचय
८.२ उपन्यास की कथावस्तु
८.३ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण
८.४ उपन्यास का परिवेश
८.५ संवाद और भाषा शैली
८.६ संदर्भ सहित व्याख्या
८.७ संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न
८.८ लघुत्तरीय प्रश्न

८.१ लेखक परिचय :

भगवतीचरण वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में ३० अगस्त, सन १९०३ को हुआ था। वर्माजी ने इलाहाबाद से बी.ए., एवं एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपने काव्य लेखन का प्रारंभ मात्र १४-१५ वर्ष की अवस्था में कर दिया था। छायावादोत्तर हिन्दी कविता की त्रयी में रामधारी सिंह दिनकर और हरिवंश राय बच्चन के बाद तीसरा नाम भगवतीचरण वर्मा का ही लिया जाता है। अपने प्रथम उपन्यास 'पतन' के बाद १९३४ चित्रलेखा के प्रकाशित होने के बाद उनकी पहचान एक उपन्यासकार के रूप में भी बन गई। सन १९३६ के आस-पास उन्होंने फिल्म कॉरपोरेशन, कलकत्ता में कार्य किया। कुछ दिनों तक 'विचार' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन, संपादन, इसके बाद बंबई में फिल्म-कथालेखन तथा दैनिक 'नवजीवन' का सम्पादन, फिर आकाशवाणी के कई केंद्रों में कार्य करते हुए सन १९५७ से वे पूर्ण रूप से लेखन कार्य से जुड़ गए और जीवन के अंतिम दिनों- सन १९८१ तक निरंतर लेखन कार्य करते रहे। उन रचना 'भूले-बिसरे चित्र' को साहित्य अकादमी प्रस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया और राज्यसभा के मानद सदस्य का गौरव भी उन्हें प्राप्त हुआ।

कृतित्व :

कहानी संग्रह- मोर्चाबंदी; कविता संग्रह- मधुकण, प्रेम संगीत, मानव; नाटक- वसीहत, रुपया तुम्हें खा गया; संस्मरण-अतीत के गर्भ से; साहित्यालोचन-साहित्य के सिध्दांत, रस; उपन्यास-पतन, चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े मेढ़े रास्ते, अपने खिलौने, भूले बिसरे चित्र, वह फिर नहीं आई, सामर्थ्य और सीमा, थके पाँव, रेखा, सीधी सच्ची बातें, युवराज चूण्डा, सबहिं नचावत राम गोसाई; प्रश्न और मरीचिका, धुप्पल, चाणक्य इत्यादि।

munotes.in

वर्मा जी का व्यक्तित्व भावनाप्रधान था। उन्होंने अपने जीवन के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण मोड़ों पर अपने निर्णय भावना के आधार पर लिये, बुध्दि के आधार पर नहीं। वे स्वयं स्वीकार करते थे कि 'मैं कलाकार या साहित्यकार इसलिए बन गया कि मेरे अन्दर अपने को ठीक से अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति थी। मुझमें भावनात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा जन्मजात थी।' उनका प्रसिध्द उपन्यास चित्रलेखा इसी भावनात्मक अभिव्यक्ति की उपज है। उनका प्रथम उपन्यास 'पतन' (१९२८) ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है जिसमें वाजिदअली शाह की विलासिता का वर्णन है। चित्रलेखा (१९३४) उनका दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में मानव जीवन को और उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को देखने-परखने का लेखक का एक नया दृष्टिकोण उभर कर आता है। हिन्दी में स्पष्ट व्यक्तिवादी चिंतन का प्रारंभ अनेक विद्वानों ने चित्रलेखा से ही माना है। इस रचना का उद्देश्य ही समाज की रूढ़ नैतिक मान्यताओं से असहमति व्यक्त कर व्यक्ति की विचारधारा को महत्त्व देना है। इस रूप में चित्रलेखा हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रथम व्यक्तिवादी घोषणा पत्र है जो संस्कारों के बोझ से दबी हुई दृष्टि को यह उपन्यास एक नया आकाश देता है। पाप और पुण्य के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए रचित इस उपन्यास में लेखक का कला कौशल और उसकी काल्पनिकता का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है।

'चित्रलेखा' न केवल भगवतीचरण वर्मा को एक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने वाला पहला उपन्यास है बल्कि हिंदी के उन विरले उपन्यासों में भी गणनीय है, जिनकी लोकप्रियता बराबर काल की सीमा को लाँघती रही है। चित्रलेखा की कथा पाप और पुण्य की समस्या पर आधारित है। पाप क्या है? उसका निवास कहां है? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए रत्नाम्बर के दो शिष्य, श्वेतांक और विशालदेव, क्रमशः सामंत बीजगुप्त और योगी कुमारगिरि की शरण में जाते हैं। इनके साथ रहते हुए श्वेतांक और विशालदेव नितान्त भिन्न जीवनानुभवों से गुजरते हैं और उनके निष्कर्षों पर महाप्रभु रत्नाम्बर की टिप्पणी यह है कि, ''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम हैं। हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता है।'' यही निचोड़ इस उपन्यास का संदेश भी है। 'चित्रलेखा' उपन्यास पर दो बार फिल्म निर्माण हो चुका है।

८.२ 'चित्रलेखा' उपन्यास की कथावस्तु :

उपन्यास 'चित्रलेखा' ने भगवतीचरण वर्मा जी को एक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। यह उपन्यास पाप और पुण्य की समस्या पर आधारित है। चित्रलेखा की कथा वहाँ से प्रारंभ होती है जब महाप्रभु रत्नाम्बर अपने दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव को यह पता लगाने के लिए कहते हैं कि पाप क्या है? तथा पुण्य किसे कहेंगे? रत्नाम्बर दोनों से कहता है कि तुम्हें संसार में ये ढूंढना होगा, जिसके लिए तुम्हें दो लोगों की सहायता की आवश्यकता होगी। एक योगी है जिसका नाम कुमारगिरी और दूसरा भोगी- जिसका नाम बीजगुप्त है। तुम दोनों को इनके जीवन-स्रोत के साथ

ही बहना होगा। महाप्रभु रत्नाम्बर ने विशालदेव और श्वेतांक के रुचियों को देखते हुए श्वेतांक को बीजगुप्त के पास और विशालदेव को योगी कुमारगिरी के पास भेज दिया। रत्नाम्बर उनके जाने से पहले उनसे कहता है कि हम एक वर्ष बाद फिर यहीं मिलेंगे, अब तुम दोनों जाओ और अपना अनुभव प्राप्त करो। किन्तु ध्यान रहे इस अनुभव में तुम स्वयं न डूब जाना। रत्नाम्बर के आदेशानुसार श्वेतांक और विशालदेव अपने-अपने मार्ग पर चलने को तैयार हो जाते है। चलने से पूर्व रत्नाम्बर उन दोनों को संबोधित करते हुए संक्षेप में बताता है कि कुमारगिरी योगी है, उसका दावा है कि उसने संसार की समस्त वासनाओं पर विजय पा ली है, उसे संसार से विरक्ति है। संसार उसका साधन है और स्वर्ग उसका लक्ष्य है, विशालदेव! वही तुम्हारा गुरु होगा। इसके विपरित बीजगुप्त भोगी है; उसके हृदय में यौवन की उमंग है और आंखों में मादकता की लाली। उसकी विशाल अट्टालिकाओं में सारा सुख है। वैभव और उल्लास की तरंगों में वह केलि करता है, ऐश्वर्य की उसके पास कमी नहीं है। आमोद-प्रमोद ही उसके जीवन का साधन और लक्ष्य भी है। श्वेतांक! उसी बीजगुप्त का तुम्हें सेवक बनना है। महाप्रभु की आज्ञा मानकर दोनों निकल पड़ते है।'

चित्रलेखा इस उपन्यास की प्रमुख नायिका है जो अठारह वर्ष की आयु में विधवा हो गई थी। फिर उसे कृष्णादित्य नामक युवक से प्रेम हो गया और वह गर्भवती हो गई, जिससे दोनों का छिपा प्रेम संसार के सामने आ गया। त्याज्य और भर्त्सना ने कृष्णादित्य को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद चित्रलेखा को एक नर्तकी ने आश्रय दिया। जहाँ उसे एक पुत्र हुआ, जो पैदा होते ही संसार छोड़कर चला गया। चित्रलेखा वहीं नर्तकी का कार्य करने लगी। वह इतनी सुंदर और आकर्षक थी कि पाटलीपुत्र का जनसमुदाय उसके कदमों पर लेटा करता था, परंतु उसने अपने संयम के तेज से अपनी कान्ति को बनाए रखा। एक दिन वह अपने पेशे के अनुसार अपना नृत्य प्रस्तुत कर रही थी, उसी समय बीजगुप्त भी उसका नृत्य देखने आया था। बीजगुप्त पाटलीपुत्र के सुंदर पुरुषों में से एक है। बीजगुप्त सामंत है, वह अपने विशाल अट्टालिकाओं में भोग-गिलास, मदिरापान और नर्तकियों के नृत्य में मग्न रहता है। नृत्य करती चित्रलेखा की दृष्टि उस पर पड़ी। उसे लगा कि कृष्णादित्य, बीजगुप्त के रूप में स्वर्ग से यहां आ गया है, तभी बीजगुप्त की आंखें भी चित्रलेखा से मिल गयी। बीजगुप्त, चित्रलेखा पर मोहित हो गया, और उसने चित्रलेखा से अकेले मिलने का प्रस्ताव रखा। चित्रलेखा ने कहा मैं वैश्या नहीं हूं, केवल एक नर्तकी हूं और मेरा संबंध व्यक्ति से नहीं है मैं समुदाय में आती हूं। यह सुनकर बीजगुप्त उदास हो गया। वह स्वयं तो बेचैन था ही साथ ही साथ चित्रलेखा के हृदय में भी वही बेचैनी उत्पन्न कर गया। धीरे-धीरे दोनों को एक दूसरे से प्रेम हो गया। चित्रलेखा और बीजगुप्त मादकता और भोग-विलास में लिप्त हो गये और इसे ही संसार का सुख समझने लगे।

एक दिन दोनों केलिगृह में मादकता और उन्माद में खोये थे उसी समय वहाँ रत्नाम्बर और श्वेतांक ने प्रवेश किया। वे थोड़ी देर रुके और उन्होंने कहा कि- ''पाटलीपुत्र की सर्वसुंदरी और पवित्र नर्तकी अर्धरात्रि के समय बीजगुप्त के केलिगृह में! आश्चर्य होता है।''

बीजगुप्त ने महाप्रभु रत्नाम्बर के आने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे शिष्य ने आज मुझसे प्रश्न पूछा कि पाप क्या है? जिसका उत्तर देने में मैं असमर्थ हूं। इसका पता लगाने के लिए ब्रह्मचारी की कुटी उपयुक्त साधन नहीं है। इसलिए मैं तुम्हारी सहायता गुरु दक्षिणा के रूप में लेना चाहता हूं। संसार के भोग विलास में ही तुम्हारा सही परीक्षण हो सकेगा इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम श्वेतांक को सेवक के रूप में स्वीकार करो और याद रखना यह तुम्हारा गुरु भाई भी हो सकता है। बीजगुप्त ने रत्नाम्बर की आज्ञा शिरोधार्य की, रत्नाम्बर चला गया। बीजगुप्त, चित्रलेखा का श्वेतांक से परिचय कराते हुए कहता है ध्यान रखो तुम मेरे सेवक हो और चित्रलेखा मेरी पत्नी के समान है तो यह तुम्हारी स्वामिनी हुई।

केलि-भवन में चित्रलेखा के मादक सौंदर्य को देखकर श्वेतांक की आंखें चौंधियाँ गई। श्वेतांक ने जब बीजगुप्त के कहने पर चित्रलेखा को मदिरा का पात्र थमाया तो उसका हाथ नर्तकी (चित्रलेखा) के हाथ से स्पर्श हो गया जिससे श्वेतांक का पूरा शरीर काँप गया। उसी दिन बीजगुप्त ने श्वेतांक से चित्रलेखा को उसके भवन तक छोड़ आने का आदेश दिया। धीरे-धीरे यह श्वेतांक का रोज का ही कार्य बन गया। दूसरी ओर कुमारगिरि जो कि योगी है। उसका क्षेत्र संयम और नियम है, उसका मानना है कि संयम और नियम से पाप दूर रहता है। फिर भी वह अपने आचार्य रत्नाम्बर के कहने पर विशालदेव को पाप का पता लगाने के लिए शिष्य के रूप में स्वीकार कर लेता है। विशाल देव अपने गुरु कुमारगिरि के बताए गए सिध्दांत, नियम और संयम के साथ तपस्या करने लगता है।

एक दिन सम्राट चंद्रगुप्त के महल में किसी उत्सव का आयोजन होता है, जहां अनेक गणमान्य उपस्थित होते हैं। उसी उत्सव में योगी कुमारगिरी और चित्रलेखा भी उपस्थित निमंत्रित होते हैं। जब नृत्य का आयोजन प्रारंभ होता है तो चित्रलेखा अपना नृत्य प्रस्तुत करती है, जिसका आकर्षक सौंदर्य देखकर सब मोहित हो उठते हैं। चित्रलेखा जब नृत्य करना प्रारंभ करती है तो उसकी दृष्टि कुमागिरि की ओर जाती है, वह उन्हें देखकर उनकी ओर आकृष्ट होती है, तभी कुमारगिरि की दृष्टि चित्रलेखा से मिल जाती है।

सम्राट की सभा में महामंत्री चाणक्य द्वारा तर्क-वितर्क होता है। जिसमें कुमारगिरी अपने योग और साधना को समूह के समक्ष सिध्द करते हैं। तभी चित्रलेखा कुमारगिरी के योग और संयम को समूह के समक्ष पलटकर लोगों में उसके प्रति संशय उत्पन्न कर देती है। जिससे कुमारगिरी आहत हो जाता है और चित्रलेखा कुमारगिरी पर पूरी तरह से मोहित हो जाती है। पाटलीपुत्र के एक वयोवृध्द सामंत हैं- आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय। उनकी इकलौती कन्या है- यशोधरा जिसका विवाह वह अपने ही समान महान सामंत बीजगुप्त से करना चाहते थे। बीजगुप्त उस नगर का सुंदर और महान सामंत है। यही जानकर मृत्युंजय ने यशोधरा के साथ उसके विवाह का प्रस्ताव रखा। लेकिन बीजगुप्त ने चित्रलेखा के प्रेम में पड़े होने के नाते इस प्रस्ताव से इनकार कर दिया। उसने कहा है कि वह केवल एक ही स्त्री से प्रेम करता है वह है चित्रलेखा।

जब यह बात चित्रलेखा को पता चली तो उसने बीजगुप्त का विवाह यशोधरा से करवाने का निश्चय कर लिया और मन-ही-मन कुमारगिरी के आश्रम जाकर रहने का विचार बना लिया। किंतु इस समय वह बीजगुप्त को त्यागने और स्वयं कुमारगिरि के आश्रम में जाकर रहने के परिणामों से बिलकुल अपरिचित थी। उसने बीजगुप्त से यशोधरा के साथ विवाह की बात की तथा उससे यह भी कहा कि यशोधरा से विवाह करने में ही तुम्हारा भला हो सकेगा और तुम्हारा वंश बढ़ाने के लिए तुम्हे उत्तराधिकार मिल सकेगा। रहा मेरा प्रश्न? तो मैंने कुमारगिरी के आश्रय में जाने का निर्णय लिया है। बीजगुप्त ने चित्रलेखा से कहा मैं केवल तुमसे प्रेम करता हूं। किसी और की कल्पना और प्रेम मैं नहीं कर सकता। बीजगुप्त की इन बातों को चित्रलेखा ने अनदेखा कर दिया।

चित्रलेखा के कुमारगिरी के आश्रम में जाने के बाद बीजगुप्त पाटलीपुत्र में न रह पाया। उसने मृत्युंजय की पुत्री के साथ विवाह का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। उसे सारी बातें उसे परेशान करने लगीं। उसने मृत्युंजय के भवन जाकर क्षमा मांगने का निर्णय लिया और श्वेतांक से सन्देश भिजवाया। श्वेतांक मृत्युंजय के महल संदेश लेकर पहुंचा तो वहां उनकी पुत्री यशोधरा मिली उस समय उसके पिता महल में अनुपस्थित थे। श्वेतांक की दृष्टि यशोधरा की दृष्टि से मिली। यशोधरा सुंदर और आकर्षक थी। उसे देखकर श्वेतांक उसकी और आकर्षित होने लगा। उसी समय यशोधरा के पिता मृत्युंजय वहां आये। मृत्युंजय ने श्वेतांक से आने का कारण पूछा तो श्वेतांक ने बताया कि बीजगुप्त आपसे क्षमा-याचना चाहते हैं। श्वेतांक ने यह भी बताया कि बीजगुप्त कुछ समय के लिए पाटलीपुत्र से बाहर काशी जा रहे हैं। (क्योंकि बीजगुप्त इन सारी दुविधाओं से निकलकर अपना कुछ समय एकांत में व्यतीत करना चाहते हैं।) यशोधरा ने अपने पिता से कहा- ''क्यों ना हम भी काशी भ्रमण के लिए जाएँ।'' पिताजी मैंने भी काशी नहीं देखा है। मृत्युंजय ने श्वेतांक से कहा कि बीजगुप्त से कह देना कि हम भी साथ चल रहे हैं। श्वेतांक नही चाहता था कि बीजगुप्त और यशोधरा काशी यात्रा में साथ जाएँ लेकिन अपने सीमाओं के कारण वह कुछ नहीं बोल सका।

काशी में कुछ समय व्यतीत करने के बाद बीजगुप्त यशोधरा की तरफ धीरे-धीरे आकर्षित होने लगा था। लौटने पर उसने यशोधरा से विवाह करने का निर्णय लिया। उसने मन-ही-मन कहा कि चित्रलेखा ने मुझे छोड़ा है मैंने चित्रलेखा को नहीं। जब यह प्रस्ताव वह श्वेतांक द्वारा यशोधरा तक भेजवाना चाहता है तो श्वेतांक उसे बताता है कि यशोधरा से तो वह स्वयं विवाह करना चाहता है। यह जानकर बीजगुप्त क्रोधित होता है और सोचता है कि यशोधरा से विवाह वही करेगा श्वेतांक उसका अधिकारी नहीं है। लेकिन बाद में श्वेतांक के मन की पीड़ा जान कर वह स्वयं उसका प्रस्ताव लेकर मृत्युन्जय के पास जाता है और उसकी तारीफ करते हुए यशोधरा से उसके विवाह का प्रस्ताव रखता है। मृत्युन्जय श्वेतांक के पिता जी के सहपाठी थे। वह उसे अच्छी तरह जानते थे लेकिन निर्धन होने के कारण उन्होंने उससे अपनी बेटी के का विवाह करने से मना कर दिया था। बीजगुप्त की उम्र अभी अधिक नहीं है यदि उसका विचार बदल गया और उसने दूसरी शादी कर ली तो उसका खुद का पुत्र ही उसका उत्तराधिकारी बनेगा। यह पता चलते ही बीजगुप्तने अपनी सारी

संपत्ति और और अपने पद श्वेतांक को दान देने की बात कह दीया। फिर, बड़े धूम-धाम से श्वेतांक और यशोधरा का विवाह संपन्न हो गया।

इधर कुमारगिरि चित्रलेखा पर पूर्ण रुप से मोहित हो जाता है। वासना की आग में धधकता उसका मन ध्यानस्थ हो ही नहीं पाता। वह चित्रलेखा के शरीर को भोगना चाहता है। चित्रलेखा उसकी भावनाओं को अच्छी तरह समझने लगती है। कुमारगिरि का योग उसे पूर्णतः आडम्बर लगने लगता है। वह इस आडम्बरी दुनिया से अब निकलना चाहती है। चित्रलेखा पुनः बीजगुप्त के पास जाना चाहती है। यह जानकर कुमारगिरि विचलित हो उठता है और चित्रलेखा से झूठ बोलता है कि अब तो बीजगुप्त का विवाह यशोधरा से हो गया। तुम वहां जाओगी तो बीजगुप्त तुम्हें वहां से निकाल देगा।

यह सब सुनकर चित्रलेखा आहत हो जाती है। कुमारगिरि उससे कहता है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं और तुम मेरे लिए ही तो यहां आई हो। चित्रलेखा और कुमारगिरी दोनों वासना में लीन हो जाते हैं और कुमारगिरी का संयम-नियम टूट जाता है। चित्रलेखा के मन में बीजगुप्त और यशोधरा के विवाह की बात पर विश्वास नही होता। इस सच्चाई का पता लगाने के लिए वह विशालदेव को विश्वास में लेकर उसे बीजगुप्त के घर भेजती है। जहाँ श्वेतांक उसे मिलता है और यशोधरा से अपने प्रेम की बात बताता है। उसे यह भी पता चलता है कि बीजगुप्त का प्रेम अब भी चित्रलेखा के लिए जीवित है। विशालदेव से यह जानकारी मिलते ही कुमार गिरि के प्रति उसका क्रोध भड़क उठता है और उसे धिक्कारती हुई वहाँ से निकल जाती है लेकिन बीजगुप्त के पास जाने का साहस उसे नही हो पाता है। व्यथित चित्रलेखा कुमारगिरि का आश्रम छोड़ कर अपने घर चली आती है और संयमित जीवन जीने लगती है। श्वेतांक अपने विवाह के प्रीति भोज में शामिल होने के लिए जब उसे निमंत्रण देने आता है तो उसे बीजगुप्त, यशोधरा और श्वेतांक के विवाह तथा बीजगुप्त के भिखारी के रूप में निकल जाने आदि सभी बातों का पता चलता है। उस समय वह श्वेतांक को शुभकामनायें तो देती है लेकिन प्रीतिभोज में शामिल नहीं होती है बल्कि, रात्रि में बीजगुप्त से मिलने जाती है। उस समय आधी रात बीत चुकी है। बीजगुप्त राजा से आज्ञा लेकर एक भिखारी के रूप में देश पर्यटन के लिए निकल चुका है। चित्रलेखा उससे रास्ते में मिलती है और अपने भवन पर चलने के लिए निवेदन करती है। इस समय बीजगुप्त उससे कहता है- ''चलो चित्रलेखा, संसार में एक तुम्हारी ही बात मैं नहीं टाल सकता। मुझे जितना गिराना चाहो, गिराओ; पर यह वचन दे दो कि तुम मुझे कल नहीं रोकोगी।'' भवन जाने पर बीजगुप्त को सभी बातें चित्रलेखा बताती है। अपना दुख बताते हुए वह बीजगुप्त से कहती है कि 'मैं कुमारगिरि की वासना का साधन बन चुकी थी इसलिए तुम्हारे पास आना नहीं चाहती थी।' मुझे क्षमा कर दो। बीजगुप्त हँस पड़ता है वह चित्रलेखा से कहता है- ''चित्रलेखा! तुमने बहुत बड़ी भूल की। तुमने मुझे समझने में भ्रम किया। तुम मुझसे क्षमा मांगती हो? चित्रलेखा! प्रेम स्वयं एक त्याग है, विस्मृति है, तन्मयता है। प्रेम के प्रांगण में कोई अपराध ही नहीं होता, फिर क्षमा कैसी! फिर भी यदि तुम कहलाना ही चाहती हो तो मैं कहे देता हूँ।'' मैं तुम्हें क्षमा

करता हूं।'' बीजगुप्त पुनः जब अपनी यात्रा पर जाने की बात कहता है तो चित्रलेखा अपने धन के साथ रहने का प्रस्ताव रखती है लेकिन बीजगुप्त अब वैभवपूर्ण जीवन न जीने की बात कहता है। फिर, चित्रलेखा भी अपनी सारी धनराशि दान में दे देती है और दोनों भिखारी बन कर निकल पड़ते हैं। इस समय दोनों के चेहरे अत्यंत प्रसन्न हैं।

एक वर्ष बीत जाने के बाद जब रत्नाम्बर श्वेतांक से पूछता है कि बताओ- कुमारगिरी और बीजगुप्त में पापी कौन है? तो, श्वेतांक कहता है कि बीजगुप्त त्याग की प्रतिमूर्ति हैं और देवता हैं, उनका हृदय विशाल है कि जबकि कुमारगिरि पशु है। वह अपने लिए जीवित है, संसार में उसका जीवन व्यर्थ है। वह जीवन के नियमों के प्रतिकूल चल रहा है। अपने सुख के लिए उसने संसार की बाधाओं से मुंह मोड़ लिया है। कुमारगिरि पापी है।

रत्नाम्बर यही प्रश्न विशालदेव से पूछता है-तुमने तो योग की दीक्षा भी ले ली है। तुम योगी हो गए हो। अब तुम तो बतलाओ कि कुमारगिरि और बीजगुप्त में से पापी कौन है?

विशालदेव कहता है- महाप्रभु कुमारगिरि अजित हैं। उन्होंने ममत्व को वशीभूत कर लिया है। उनकी साधना, उनका ज्ञान और उनकी शक्ति पूर्ण है। और बीजगुप्त वासना का दास है। उसका जीवन संसार के घृणित भोग-विलास में है। वह पापी है- पापमय संसार का वह मुख्य भाग है।

रत्नाम्बर विभिन्न परिस्थितियों में रह रहे अपने दोनों शिष्यों से कहता है कि-

''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनः प्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है- प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनः प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दुहराता है- यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। अपना स्वामी नहीं, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा?''

अंत में उन्हें समझाते हुए रत्नाम्बर कहता है कि- ''संसार में इसीलिये पाप की परिभाषा नहीं हो सकी- और न हो सकती है। हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता।'' अंत में उठते हुए उन्हीने कहा कि यह मेरा मत है, आपका मानना या न मानना आपके ऊपर निर्भर है। और दोनों शिष्यों को आशीर्वाद देते हुए वहाँ से चला जाता है।

निष्कर्ष : वास्तव में चित्रलेखा की कथावस्तु उसे औपन्यासिक रचना का रूप प्रदान करती है और उसकी अभिव्यक्ति में कवित्व झलकता है। यहाँ हम कर्म और भोग को समानांतर रूप में देख सकते हैं। इस रचना में लेखक एक तरफ कर्म पर जोर देता है तो दूसरी तरफ भोग के प्रति भी आश्वस्त दिखाई देता है।

भगवतीचरण वर्मा द्वारा लिखित उपन्यास 'चित्रलेखा' पाप और पुण्य के प्रश्न पर आधारित है। यह मानव जीवन की अच्छाइयों और बुराइयों को देखने के निजी दृष्टिकोण पर आधारित है। जहां चित्रलेखा, बीजगुप्त, कुमारगिरि और श्वेतांक एवं यशोधरा आदि अन्य पात्रों के माध्यम से लेखक यह संकेत करना चाहता है कि व्यक्ति पूर्णरूपेण परिस्थितियों का दास होता है। वह प्राकृतिक नियमों से दूर जाकर शांत नहीं रह सकता। कहीं न कहीं सामान्य जीवन की धारा उसके मन में भी प्रवाहित होती रहती है। उसे छिपाने की कोई लाख कोशिशें कर ले, कहीं न कहीं वह ऊपर आती ही हैं। इसलिए संस्कारों के आडम्बरों की चादर के नीचे जीवन के यथार्थ को बहुत देर छिपाया नहीं जा सकता है। इसलिए उपन्यास के अंत में रत्नाम्बर कहता है कि– ''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण का दूसरा नाम है। .... मनुष्य में ममत्व प्रधान है। प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। केवल व्यक्तियों के सुख के केंद्र भिन्न–भिन्न हिते हैं। कुछ सुख को धन में देखते हैं, कुछ सुख को मदिरा में देखते हैं, कुछ सुख को व्यभिचार में देखते हैं, कुछ त्याग में देखते हैं– पर सुख प्रत्येक व्यक्ति चाहता है! कोई भी व्यक्ति संसार में अपनी इच्छा अनुसार वह काम न करेगा, जिसमें दुःख मिले–यही मनुष्य की मनः प्रवृत्ति है और उसके दृष्टिकोण की विषमता है।''

उपन्यासकार यह भी बताना चाहते हैं कि ऐसा नहीं कि मनुष्य जैसा दिखता है अंदर से उसका स्वभाव भी वैसा ही हो। कई बार ऐसा भी होता है कि हमारी भावनाएं कुछ और होती हैं और हम प्रदर्शन किसी और का करते हैं। यहाँ कुमार गिरि का चरित्र इसी बात की ओर संकेत करता है कि– ऐसा नहीं है कि योगी के हृदय में प्रेम भावना उत्पन्न ना हो या फिर भोग–विलास में लीन रहने वाला मनुष्य योगी नहीं बन सकता। लेखक यहाँ प्रेम और वासना में भेद स्पष्ट करते हुए यह बताना चाहते हैं कि प्रेम और वासना में भेद है। जहाँ वासना पागलपन है, यह क्षणभर के लिए होती है और इसलिए पागलपन के साथ ही दूर हो जाती है, लेकिन प्रेम गंभीर है। उसका अस्तित्व शीघ्र नहीं मिटता। वह अनेकानेक झंझावातों के बाद भी स्थाई बना रहता है। सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद भी चित्रलेखा का बीजगुप्त के प्रति प्रेम अथवा बीजगुप्त द्वारा सबकुछ त्याग देने और चित्रलेखा की सभी बातों को जान–समझ कर भी उसे स्वीकार कर लेने की घटनाएं लेखक के उक्त विचारों का ही समर्थ करती हैं। सामान्य रूप से यह देखने में आता है कि मानव निरुपाय सा परिस्थितियों के साथ उठता–गिरता रहता है या कई बार संस्कारिता का दंभ भरनेवाला व्यक्ति भी जीवन की सच्चाइयों के साथ बहता दिखाई देता है। मानव जीवन के इसी भावात्मक पक्ष को लेखक ने बड़ी बारीकी से उकेरने का कार्य इस उपन्यास में किया है। संस्कारों के आडम्बरों में जकड़ी हुई मानवीय भावनाओं को एक नवीन दृष्टि से देखने का कार्य वर्मा जी ने यहाँ किया है।

८.३ उपन्यासों के पात्रों का चरित्र–चित्रण :

चित्रलेखा उपन्यास में चित्रलेखा, बीजगुप्त तथा कुमारगिरी मुख्य पात्र हैं– तथा सहयोगी पात्रों में महाप्रभु रत्नाम्बर तथा उनके दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव तथा मृत्युंजय एवं उनकी पुत्री यशोधरा है। यहाँ हम कुछ प्रमुख पात्रों के चरित्र की संक्षिप्त चर्चा करेंगेः

munotes.in

कुमारगिरीः

कुमारगिरी इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में से एक है। वह योगी है और उसका दावा है कि युवावस्था में ही उसने जीवन की समस्त वासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। संसार को उसको विरक्ति है, और अपने मतानुसार उसने सुख को भी जान लिया है। उसमें तेज है, प्रताप है। उसमें शारीरिक बल और आत्मिक बल दोनों है, जैसे कि लोगों का कहना है- उसने ममत्व को वशीभूत कर लिया है। प्रस्तुत उपन्यास में वह भारतीय संस्कृति के उस आदर्श रूप का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है जो समस्त पाप का मूल वासना समझता है। उसके अनुसार 'वासना के कारण ही मनुष्य पाप करता है।'

कुमारगिरि का व्यक्तित्व अत्यंत तेजस्वी है जिसकी शक्तियों से स्वयं रत्ताम्बर भी अभिभूत है। इसलिए वह एक जगह कहता है- ''तुम वास्तव में श्रेष्ठ हो। तुम संसार से बहुत ऊपर उठ चुके हो अभी तक मैं संसार में ही हूँ।.... तुममे ज्ञान है, कल्पना है और मुझमे केवल अनुभव है।'' कुमारगिरि प्रारंभ में अपने ज्ञान और संयम के प्रति अहंकारी दिखाई देता है। विनम्रता और उदारता तो कहीं दिखाई ही नहीं देती। जिसका पूर्ण परिचय चन्द्रगुप्त के दरबार में मिल जाता है जहाँ चित्रलेखा के तर्कों के समक्ष पराजित होकर भी अपनी पराजय को अपने अहंकार के दंभ में स्वीकार नहीं करता है। इसके साथ ही साथ वह क्षुद्र वृत्तियों का दास भी है। पतन के मार्ग बढ़ते हुए चित्रलेखा के शरीर को प्राप्त करने के लिए वह उचित-अनुचित हर प्रकार के संसाधनों का प्रयोग करता है। बीजगुप्त के यशोधरा के साथ विवाह की गलत सूचना देकर चित्रलेखा को अपनी वासना का शिकार बनता है। अंत में उसके व्यक्तित्व को चित्रलेखा के शब्दों में देखा जा सकता है। जहाँ वह कहती है ''वासना के कीड़े तुम प्रेम क्या जानो? तुम अपने लिए जीवित हो- ममत्व ही तुम्हारा केंद्र है... तुम्हारी तपस्या और तुम्हारा ज्ञान- तुम्हारी साधना और तुम्हारी आराधना- यह सब भ्रम है, सत्य से कोसों दूर है। तुम अपनी तुष्टि के लिए गृहस्थाश्रम की बाधाओं से कायरता पूर्वक सन्यासी का ढोंग लेकर विश्व को धोखा देते हुए मुख मोड़ सकते हो- तुम अपनी वासना को तुष्ट करने के लिए मुझे धोखा दे सकते हो- और फिर तुम प्रेम की दुहाई देते हो। वह समाज के समक्ष जितना ही संयमी और संस्कारित बनता है उसका आंतरिक पक्ष उतना ही पतित और निम्न स्तर का है।''

बीजगुप्तः

बीजगुप्त चित्रलेखा उपन्यास का नायक है। लेखक के उद्देश्य प्राप्ति का वही आधारस्तंभ है। उसके माध्यम से उपन्यासकार ने पाप और पुण्य जैसी व्यापक समस्या को अपनी परम्परा से अलग हटकर एक नवीन दृष्टिकोण देने का कार्य किया है। प्रेम की पवित्रता के साथ-साथ उसमें पर्याप्त साहस भी है जिसके बल पर वह चित्रलेखा को अपनी पत्नी के रूप में सम्मान दिलवाना चाहता है।

बीजगुप्त भोगी है, उसके हृदय में यौवन की उमंग है और आंखों में मादकता की लाली। उसकी विशाल अट्टलिकाओं में भोग-विलास नाचा करते हैं। वैभव और

उल्लास की तरंगों में वह केलि करता है। ऐश्वर्य की उसके पास कमी नहीं है और उसके हृदय में संसार की समस्त वासनाओं का निवास। ईश्वर पर उसे विश्वास नहीं, आमोद और प्रमोद ही उसके जीवन का साधन है तथा लक्ष्य भी है। यही कारण है कि योगी रत्नाम्बर अपने शिष्य श्वेतांक को बीजगुप्त के पास भेजा यह जानने के लिए कि ''पाप क्या है?'' बीजगुप्त का हृदय विशाल है, वह श्वेतांक की गुरुभाई के रूप में स्वीकार कर लेता है। बीजगुप्त ''चित्रलेखा'' के एक नर्तकी होने के बाद भी उससे सच्चा प्रेम करते है। समाज के विरुध्द जाकर वह चित्रलेखा को अपनी पत्नी मानता है। चित्रलेखा के लिए वह अपने विवाह का प्रस्ताव तक ठुकरा देता है चित्रलेखा भी बीजगुप्त के लिए अपने प्रेम का त्याग कर कुमारगिरि के आश्रम दीक्षित होने चली जाती है। बीजगुप्त को जब यह ज्ञात होता है तो वह चित्रलेखा को समझाने उसकी कुटी पर पहुंचता है परंतु उसे निराश होकर लौटना पड़ता है।

वह परिस्थितियों से निकलने का प्रयास भी करता है परंतु सफल नहीं हो पाता। अतः काशी प्रस्थान करने का निश्चय कर लेता है। अंत में यह जानकर कि उसके गुरुभाई श्वेतांक को यशोधरा से प्रेम हो गया है वह अपनी सारी धन-संपत्ति श्वेतांक को सौंप कर उन दोनों का विवाह करा देता है। चित्रलेखा के क्षमा याचना करने पर वह उसे क्षमा भी कर देता है। बीजगुप्त समाज में रहकर सभी चीजों का भोग-विलास करते हुए भी एक 'पुण्य आत्मा' है।

बीजगुप्त के चरित्र में विरोधी वृत्तियों का समन्वय स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक तरफ उसमें प्रेम और वासना है तो दूसरी ओर त्याग और भोग भी है। यशोधरा और श्वेतांक के सम्बन्ध में वह जिस त्याग का परिचय देता है वह उसकी महानता का परिचायक है। अपनी प्रेमिका चित्रलेखा द्वारा अनेक अक्षम्य अपराध करने के बाद भी वह उसका सम्मान करता है और उसके घर जाता है। वह दृढ विचारधारा वाला व्यक्ति है। उपन्यास के अंत में जब चित्रलेखा उसे संसार में पुनः खीचना चाहती है तो वह कहता है- मैंने वैभव छोड़ा है अपनाने के लिए नहीं, उसे सदा के लिए छोड़ने के लिए। मैं तुम्हें भी एक भिखारी के रूप में स्वीकार करना चाहता हूँ।

इस प्रकार बीजगुप्त के व्यक्तित्व में प्रेम और त्याग में जिस सात्विकता का संचार लेखक द्वारा किया गया है वही उसके व्यक्तित्व को श्रेष्ठता प्रदान करता है। उसका त्याग क्षणिक नहीं, किसी आवेश में लिया हुआ भी नहीं बल्कि जीवन के विविध अनुभवों में तपा हुआ त्याग है। सबको भोगते हुए उसने इस संसार की असारता का अनुभव किया है। सबको नश्वर मानते हुए ही वह सबका त्याग भी करता है। उसके लिए यदि जीवन में कोई वस्तु पूज्य है तो- वह है सद्भावना और प्रेम और, बीजगुप्त में ये दोनों गुण स्पष्टता पूर्वक देखे जा सकते हैं। यही कारण है कि बीजगुप्त का चरित्र इस उपन्यास के पात्रों में श्रेष्ठता का हकदार कहा जा सकता है।

चित्रलेखा :

चित्रलेखा प्रस्तुत उपन्यास की केंद्रबिंदु है। वह एक साधारण ब्राह्मण परिवार की विधवा युवती है जो अपने पारिवारिक संस्कारों में संयमित जीवन यापन करना

चाहती है। इसी समय उसके जीवन में कृष्णादित्य का प्रवेश होता है जहां से उसका जीवन अनंत समुद्र में हिचकोलें खाती नाव की तरह बन जाता है। यद्यपि कि वह अपने व्यवसाय के प्रति भी पूर्णतः प्रतिबध्द है इसीलिये बीजगुप्त से कहती है-'' नहीं, मैं व्यक्ति से नहीं मिलती। मैं केवल समुदाय के सामने आती हूँ, व्यक्ति का मेरे जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं।''

उपन्यास में चित्रलेखा पाटलिपुत्र की सुंदर नर्तकी के रूप में प्रस्तुत होती है। उसका वेश्यावृत्ति स्वीकार न करना उनके व्यक्तित्व से संबंधित असाधारण बात है। उसके कई कारण थे और उन कारणों का उसके विगत जीवन से गहरा संबंध था। वह विधवा उस समय हुई थी, जिस समय उसकी अवस्था अठारह वर्ष की थी। विधवा होने के बाद संयम उसका नियम हो गया था किंतु ऐसा अधिक दिनों तक नहीं चल सका। एक दिन उसके जीवन में कृष्णादित्य ने प्रवेश किया। कृष्णादित्य से चित्रलेखा को पुत्र की प्राप्ति हुई, लेकिन पिता व बेटे दोनों ने संसार को छोड़ दिया। उसके बाद एक नर्तकी ने उसे आश्रय देकर नृत्य तथा संगीत कला की शिक्षा दी। फिर नृत्य में वह अद्वितीय बन गई। पाटलीपुत्र का जनसमुदाय चित्रलेखा के पैरो पर लोटा करता था, पर चित्रलेखा ने संयम के तेज से जनित क्रांति को बनाए रखा लेकिन बीजगुप्त पर मुग्ध होने से वह न बच पाई। इस रूप में चित्रलेखा परिस्थितियों के वशीभूत होकर चलने वाली युवती के रूप में आती है।

इस विलासी और वासनामयी रमणी के साथ-साथ चित्रलेखा तेजस्वी और विदुषी भी है। इसका परिचय वह चन्द्रगुप्त की सभा में अपनी तर्कनाशक्ति से कुमारगिरि को पराजित करके देती है। इसी प्रकार कुमारगिरि के आश्रम में जाने पर ''प्रकाश पर लुब्ध पतंग का अन्धकार को प्रणाम'' कह कर एक दार्शनिक होने का परिचय भी देती है।

चित्रलेखा बीजगुप्त से अत्याधिक प्रेम करती थी। परंतु आगे चल कर वह कुमारगिरि पर भी मोहित हुई। जो कि उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। चित्रलेखा बीजगुप्त के भविष्य के लिए बीजगुप्त का त्याग करके वह कुमारगिरि के पास दीक्षित होने गई, परंतु कुमारगिरि ने उसे असत्य के जाल में उलझा कर उसका शोषण किया। जब चित्रलेखा को सत्य का ज्ञान हुआ तो वह आश्रम छोड़ कर अपने भवन लौट गई। बीजगुप्त के ऐश्वर्य त्यागने की बात जब चित्रलेखा को ज्ञात हुई वह बीजगुप्त से क्षमा मांगने लगी। बीजगुप्त ने उसे क्षमा किया और दोनों ने अपनी धन-संपत्ति त्याग कर पाटलिपुत्र से प्रस्थान किया। इस पूरे उपन्यास में चित्रलेखा एक रूपगर्विता उन्मादिनी विलासी स्त्री के रूप दिखाई देती है जो सदा ही पुरुष को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहती है। वह अपने व्यक्तित्व से इस उपन्यास के लगभग सभी पुरुष पात्रों को प्रभावित करती है। इतना ही नहीं बीजगुप्त को यशोधरा से विवाह करके और वंशवृध्दि के लिये प्रेरित करके वह अपने त्याग वृत्ति का परिचय भी देती है।

इस प्रकार लेखक ने एक प्रेमिका को पत्नी का स्थान दिलवाकर चित्रलेखा के रूप में प्रेम और वासना के भेद को स्पष्ट कर दिया है। जहाँ प्रेम स्थाई है, उसमें

सम्पूर्ण समर्पण हैं, वहीं वासना क्षणिक है, अस्थाई है। यद्यपि कि यही वासना चित्रलेखा के चरित्र की कमजोरी है। इसी कमजोरी के कारण यह कुमारगिरि के जाल में बहुत जल्दी उलझ जाती है और जब तक उसे होश आता है तब तक सबकुछ समाप्त हो जाता है। चाहकर भी वह अपने प्रेमी बीजगुप्त को अपने भवन में नहीं रोक पाती है और उसे भी बीजगुप्त के साथ ही सबकुछ त्यागना पड़ता है। उपन्यास के अंत में अपनी त्यागी वृत्ती के कारण चित्रलेखा अपनी सम्पूर्ण दुर्बलताओं के बाद भी पाठकों की सहानुभूति प्राप्त कर लेती है। इसलिए अंत में यह कहना उचित होगा कि चित्रलेखा स्थिर चित्त नहीं है। उसने अपने वैधव्य में वैराग्य साधने की बात सोची लेकिन कृष्णादित्य के आते ही उसका विचार बदल गया और उसे अपने जीवन में स्वीकार कर लिया। एक नर्तकी के रूप में बीजगुप्त को उसने पहले तो 'समुदाय के सामने ही मैं आती हूँ' कह कर अस्वीकार किया लेकिन बाद में उसी से प्रेम करने लगी। यहाँ तक कि अपने मनोरंजन के लिए वह श्वेतांक को भी आकर्षित करती है। बाद में उसी से कहती है कि 'मैं संसार में एक मनुष्य से प्रेम करती हूँ और वह बीजगुप्त है।' लेकिन, कुछ समय बाद ही वह कुमारगिरि से प्रेम करने लगती है। विचारों की इसी अस्थिरता उसे और बीजगुप्त को अंत में निर्धन हो जाने की स्थिति में पहुँचा देती है।

महाप्रभु रत्नाम्बर :

महाप्रभु रत्नाम्बर योगी हैं। उनके दो शिष्य हैं- श्वेतांक और विशालदेव। श्वेतांक तथा विशालदेव के मन में एक प्रश्न उत्पन्न होता है- पाप क्या है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए रत्नाम्बर ने श्वेतांक को समाज के विषय में ज्ञात करने के लिए बीजगुप्त के पास तथा विशालदेव को योगी कुमारगिरि के पास भेजा। उन्हें अपने शिष्यों के मन में उठे प्रश्नों का समाधान करना था। इसलिए उन्होंने अपने शिष्यों को एक वर्ष का समय देकर समाज में भेजा।

श्वेतांक :

श्वेतांक रत्नाम्बर का शिष्य है। 'पाप क्या है?' यह जानने के लिए वह बीजगुप्त के पास आया। वह मदिरापान नहीं करता, परंतु चित्रलेखा के प्रति आकर्षित होकर चित्रलेखा के बोलने पर वह मदिरापान कर लेता है तथा वह चित्रलेखा के प्रति आकर्षित भी होता है परंतु चित्रलेखा के इन्कार के बाद वह यशोधरा पर मोहित होता है। अंत में बीजगुप्त अपनी सारी धन-संपत्ति श्वेतांक को सौंप कर यशोधरा से उसका विवाह करा देता है। श्वेतांक के रूप में लेखक ने ऐसे पात्र की सर्जना की है जो सांसारिक मोहमाया के जाल में बड़ी सरलता पूर्वक फँस जाता है। जिसका अंतकरण राग-द्वेष आदि सभी सांसारिक आकर्षणों के वशीभूत है। यही कारण है कि जो बीजगुप्त उसके गुरु की भूमिका में है उसी की होने वाली पत्नी यशोधरा से विवाह करने के लिए आतुर ही जाता है और बीजगुप्त की इच्छा के विरुध्द अपने उद्देश्य की पूर्ति करने की योजना में लगा दिखाई देता है। चित्रलेखा के प्रति उसका आकर्षण भी उसके चरित्र की ही कमजोरी है। जो व्यक्ति उसका आश्रयदाता है उसकी अनुपस्थिति में उसी की प्रेमिका के प्रति आसक्ति एक लम्पट पुरुष की ही पहचान है।

विशालदेवः

विशालदेव रत्नाम्बर का शिष्य है। महाप्रभु रत्नाम्बर ने 'पाप' का पता लगाने के लिए विशालदेव को कुमारगिरि के पास भेजा। विशालदेव कुमारगिरि और चित्रलेखा को समीप आते देखता है ओर उस पर कटाक्ष भी करता है। वह कुमारगिरि से अत्याधिक प्रभावित रहता है क्योंकि कुमारगिरि ने 'ममत्व' पर विजय प्राप्त कर ली थी। वह जीवन के अनुभवों से पूर्णतः रिक्त है और संयम के क्षेत्र में आखें बंद करके चलने वाला है। यही कारण है कि वह कुमारगिरि के आश्रम में रहकर भी कुमारगिरि के आंतरिक मनोभावों से परिचित नहीं हो पाता इसीलिये उपन्यास के अंत में कुमारगिरि को श्रेष्ठ और संयमित जीवनयापन करनेवाला बताता है।

मृत्युंजयः

पाटलीपुत्र के वयोवृद्ध सामंत मृत्युंजय के पास धन-ऐश्वर्य की अधिकता है। उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। उनकी एक सुशील कन्या है 'यशोधरा'। मृत्युंजय की इच्छा थी कि उनकी बेटी यशोधरा का विवाह बीजगुप्त से हो परंतु बीजगुप्त ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। बीजगुप्त और मृत्युंजय के संबंध अच्छे थे। जब बीजगुप्त ने श्वेतांक के साथ यशोधरा के विवाह का प्रस्ताव रखा तो पहले तो मृत्युंजय ने इंकार कर दिया परंतु बीजगुप्त द्वारा अपनी सारी संपत्ति श्वेतांक को दे देने पर वह उनका विवाह संपन्न करा देता है। इससे पता चलता है कि मृत्युंजय के लिए संस्कार और मर्यादा से अधिक महत्त्वपूर्ण धन है।

यशोधराः

यशोधरा मृत्युंजय की एकमात्र संतान है। वह अति सुंदर, पवित्र, चंचल तथा नादान कन्या है। उपन्यास में वह सत्य का पक्ष लेनेवाली नारी है। वह बीजगुप्त की तरफ आकर्षित है और अपने पिता की तरह ही वह भी उससे विवाह कर लेने लिए हर उपाय करने को तैयार है। सादगी से परिपूर्ण उसका व्यवहार सराहनीय है लेकिन चित्रलेखा की चंचल अदाओं के समक्ष बीजगुप्त को प्रभावित करने में असफल हो जाता है। अपनी बातों में वह बिलकुल सतर्क और संयमित दिखाई देती है। पुरुष वर्ग के प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण उसके चरित्र में भी दिखाई देता है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पात्रों की सर्जना आवश्यकतानुसार और कथा के अनुरूप ही किया है। उपन्यास के सभी पात्र अपनी भूमिका का बखूबी निर्वाह करते दिखाई देते हैं।

८.४ उपन्यास का परिवेश

किसी भी साहित्यिक विधा में कथ्य को सजीव, यथार्थपरक एवं अनुभूति प्रवण बनाने के लिए उससे संबध्द परिवेश को प्रस्तुत करना आवश्यक है। कथानक को प्रभावी बनाने में कथ्य से संबंधित परिवेश अर्थात देशकाल वातावरण को प्रस्तुत करना उपन्यासकार के लिए परमावश्यक है। इससे उपन्यास में सजीवता, वास्तविकता और गरिमा का समावेश होता है।

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास में परिवेश का सशक्त चित्र उपलब्ध है। इसमें निहित दृश्यविधानों में तत्कालीन वातावरण और स्थिति को स्पष्ट एवं साकार करने की पर्याप्त क्षमता है। उन्होंने अपने उपन्यास में प्रकृति वर्णन की अपेक्षा वस्तु वर्णन को प्रधानता दी है। वस्तु-वर्णन में वाटिका, बाजार, शहर, नगर, नदी, पर्वत, मंदिर, गांव आदि का समावेश किया जाता है।

भगवती चरण वर्मा ने अपने इस उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण परिवेश के अनुसार ही किया है। 'चित्रलेखा' में ऐतिहासिक वातावरण के अनुसार ही ऐतिहासिक पात्रों का चित्रण किया है।

उपन्यास को नित्य सुलभ बनाने के लिए प्राचीन उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। मंत्रणाकक्ष में राजसी वैभव दिखाना आवश्यक है। बीजगुप्त के राजमहल में सिंहासन, मदिरा, रथ, शयनकक्ष इत्यादि का वर्णन है। साथ ही काशी, गंगा नदी, गंगा तट, वृक्ष, आश्रम इत्यादि का भी वर्णन हुआ है। एक अमीर सामंत होने के कारण बीजगुप्त की वेशभूषा सामंतों के समान और चित्रलेखा की नर्तकी के समान तथा कुमारगिरि की वेशभूषा योगी के समान चित्रित करने की कोशिश की गयी है। उपन्यास कुल 'बाईस' परिदृश्यो में विभाजित है। प्रत्येक परिदृश्य की घटनाएँ अपने परिवेश के साथ ही घटित होती हैं। इसलिए पूरे उपन्यास में एक निरंतरता बनी रहती है जो पाठक को अद्यांत बाँध कर रखती है।

यह कहा जा सकता है कि 'भगवतीचरण वर्मा' के उपन्यास 'चित्रलेखा' में देशकाल एवं वातावरण का सजीवता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता और पात्रनुकूलता के साथ चित्रित हुआ है।

८.५ संवाद और भाषाशैली

कथानक और पात्र विधान के समानांतर 'संवाद तथा भाषाशैली' को भी उपन्यास का प्रधान एवं परमावश्यक तत्त्व माना गया है। इसे उपन्यास का प्राण कहा जा सकता है। निःसंदेह उपन्यास के विभिन्न उपकरणों को एक सूत्र में पिरोकर उपन्यास का रूप प्रदान करनेवाला यह एक मात्र तत्त्व है। संवाद तत्व ही वह धुरी है जिस पर उपन्यास चक्र घूमता है। संवाद या भाषा के अभाव में संसार का कोई उपन्यास नहीं रह जाता। चित्रलेखा उपन्यास में पात्रों के वार्तालाप एवं वाद-विवाद में काव्यमयता दिखाई देती है यही कारण है कि यहाँ भावों का प्रस्तुतीकरण भी काव्यमय बन पड़ा है। संवाद के शब्द कहीं-कहीं तीर की तरह पैने हैं तो कहीं तीव्र व्यंग्यात्मकता लिए हुए दिखाई देते हैं। इस उपन्यास में संवाद कहीं दीर्घ तो कहीं-कहीं अति संक्षिप्त दिखाई देते हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ दर्शनीय है-

कुमारगिरि-मेरा शिष्य विशालदेव आज रात को मेरी कुटी में विश्राम करेगा, उसकी कुटी खाली है, अतिथि वहां जा सकते हैं।

चित्रलेखा- योगी! तपस्या जीवन की भूल है, यह मैं तुम्हें बताए देती हूं। तपस्या

की वास्तविकता है आत्मा का हनन। ''प्रेम और वासना में भेद है, केवल इतना की वासना पागलपन है, जो क्षणिक है और इसलिए वासना पागलपन के साथ ही दूर हो जाती है; और प्रेम गंभीर है। उसका अस्तित्व शीघ्र नहीं मिटता।''

एक अन्य उदाहरण–

''श्वेतांक''!

''स्वामी''!

''बतला सकते हो, तुमने आज क्या देखा।''

हाँ! आज योगी कुमारगिरि को स्वामिनी ने पराजित किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि चित्रलेखा उपन्यास की संवाद योजना पूर्णतः परिस्थितियों और पात्रों के अनुकूल है।

चित्रलेखा का रचनाकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद के नाम से प्रसिध्द है। भाषा की दृष्टि से यह युग संस्कृतनिष्ठता और परिष्कृत भाषा के लिए प्रसिध्द है। यही कारण है कि इस उपन्यास में तत्सम प्रधान शब्दावली की अधिकता है। इसे पढ़ते समय अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग भी मिलता है जिन्हें अप्रचलित शब्द कहा जा सकता है। फिर भी भाषा पूर्णतः पात्रों और परिस्थितियों के अनुकूल है। जो लेखक के भावों का वहां करने में सक्षम है।

'चित्रलेखा' उपन्यास पूर्णतः अभिनय हैं। इस उपन्यास में किसी प्रकार की क्लिष्टता नही है। चित्रलेखा उपन्यास का हर प्रसंग रोचक है। उपन्यास के संवाद सरल, संक्षिप्त तथा रोचक है। इसी कारण उपन्यास अभिनयक्षम है। तथा भाषाशैली सरल और रोचक है।

८.६ संदर्भ सहित व्याख्या

अवतरण – १

''मनुष्य की अंतरात्मा केवल उसी बात को अनुचित समझती है, जिसको समाज अनुचित समझता है। इसलिए यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि अंतरात्मा समाज द्वारा निर्मित है। मनुष्य के हृदय में समाज के नियमों के प्रति अन्धविश्वास और पूर्ण श्रध्दा को ही अंतरात्मा कहते हैं। समाज से पृथक उसका कोई अस्तित्व नहीं है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिध्द उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा द्वारा लिखित और स्नातक 'प्रथम वर्ष कला' के पाठ्यपुस्तक में निर्धारित उपन्यास ''चित्रलेखा'' से लिया गया है। इस उपन्यास में ''पाप क्या है?'' इस विषय पर विचार किया गया है। यह गद्यांश उपन्यास के ''पाँचवे परिच्छेद'' से लिया गया है। इस परिच्छेद में लेखक ने योगी तथा मंत्रीमंडल में बैठे विद्वानो की चर्चाओं पर प्रकाश डाला गया है।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण में आचार्य चाणक्य और योगी कुमारगिरि के बीच के वार्तालाप को दर्शाया गया है। आचार्य चाणक्य मंत्रिमंडल में बैठे विद्वानों के समक्ष उक्त बातें कह रहे हैं। यहाँ चाणक्य द्वारा समाज, हमारी अंतरात्मा और उचित-अनुचित के आंतरिक पक्षों और उनके आपसी संबंधों पर चर्चा हो रही है।

व्याख्या :

महायज्ञ में अभिमन्त्रित राज-प्रसाद के विशाल प्रांगण में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य आसीन थे। रत्नजटित स्वर्ण के राज-सिंहासन पर महाराज विराजमान थे। सामने कर्मकांडी ब्राह्मणों तथा तपस्वियों का जमघट था। यह सभा, प्रथा के अनुसार, महायज्ञ के बाद ''दर्शन पर तर्क करने'' के लिए एकत्र हुई थी। महाराज चंद्रगुप्त ने हंसकर अपने प्रधानमंत्री चाणक्य की और देखा आपका नीतिशास्त्र अनेक स्थानों पर धार्मिक सिध्दांतो की अवहेलना करता है। इस विरोध का क्या कारण है? क्या नीतिशास्त्र धर्म के अंतर्गत है अथवा नहीं ?

चाणक्य ने कहा मेरे नीतिशास्त्र में कहीं-कहीं निर्धारित धर्म की रुढ़ियो के विरोधी सिध्दांत मिलते हैं, मैं भी यह मानता हूँ कि ''धर्म समाज द्वारा'' निर्मित है। धर्म ने नीतिशास्त्र को जन्म दिया और इसके विपरीत नीतिशास्त्र ने धर्म को जन्म दिया है। समाज को जीवित रखने के लिए समाज द्वारा निर्धारित नियमों को ही ''नीतिशास्त्र'' कहते हैं। और मनुष्य धर्म में बंधकर इन नियमों का पालन करता है वह समाज के लिए हितकर है।

चाणक्य का वाक्य खत्म होते ही सभा में सन्नाटा छा गया। फिर विद्वानमंडली में बैठे हुए योगी कुमारगिरि ने शांत भाव से उत्तर देता है- मनुष्य का जन्मदाता ईश्वर है और मनुष्य समाज का जन्मदाता है। धर्म ईश्वर का सांसरिक रूप है, वह मनुष्य को ईश्वर से मिलने का साधन है। सत्य एक हैं और धर्म उसी सत्य का दूसरा नाम!

इस प्रकार दोनों विद्वानों में तर्क-वितर्क चल रहा था। चाणक्य ने कहा अंतरात्मा ईश्वर द्वारा निर्मित नहीं हो सकती वह समाज द्वारा निर्मित है। उसके भिन्न-भिन्न रूप हैं। वह सिर्फ उसी बात को अनुचित समझती है जिसे समाज अनुचित समझता है। इसलिए सभी अंतरात्मा भिन्न है जब ईश्वर एक है तो सभी की सोच तथा विचार एक समान होना चाहिए, धर्म को ईश्वर ने बनाया है परंतु ऐसा नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अंतरात्मा समाज द्वारा निर्मित है। मनुष्य के हृदय में समाज के नियमों के प्रति अंधविश्वास और पूर्ण श्रध्दा को ही अंतरात्मा कहते हैं। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। चाणक्य के अकाट्य तर्कों से सभी विद्वान प्रभावित हुए और उनके मस्तक नवा दिए। परंतु कुमारगिरि उनके तर्क से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपनी शक्ति से सबको भ्रमित कर ईश्वर के दर्शन करवाया। परंतु चित्रलेखा भ्रमित नहीं हुई उसने कहा योगी सत्य कहो क्या तुमने अपनी आत्मशक्ति से सारे जलमंडल को प्रभावित अपनी कल्पना द्वारा निर्मित सत्य तथा ईश्वर का रूप दिखलाया है? तुम योगी हो असत्य नहीं कह सकते योगी ने अपनी भूल मानी। फिर चित्रलेखा ने कहा क्या यह भी ठीक है कि जिन लोगों की आत्मशक्ति इतनी प्रबल है कि वे

तुम्हारी आत्मशक्ति से प्रभावित नहीं हो सके, उन लोगों को तुम अपनी कल्पनाजनित चीजें नहीं दिखला सकें?

सभी में हलचल मच गई, कुमारगिरि ने अपनी भूल को स्वीकृत किया। चित्रलेखा को विजय मुकुट पहनाया गया।

विशेष :

१. इस प्रसंग के माध्यम से लेखक यह दर्शाना चाहते हैं कि 'धर्म' समाज द्वारा निर्मित है।

२. इस प्रसंग में नृत्य तथा राजभवन का वर्णन है।

३. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

अवतरण – २

''मनुष्य को जन्म देते हुए ईश्वर ने उसका कार्य क्षेत्र निर्धारित कर दिया। उसने मनुष्य को इसलिए जन्म दिया है कि वह संसार में आकर कर्म करे, कायर की भांति संसार की बाधाओं से मुख न मोड़ ले। और सुख! सुख तृप्ति का दूसरा नाम है। तृप्ति वहीं संभव है, जहाँ इच्छा होगी, वासना होगी।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश 'प्रथम वर्ष कला' के पाठ्यपुस्तक में निर्धारित उपन्यास ''चित्रलेखा'' से लिया गया है। इसके उपन्यासकार ''भगवतीचरण वर्मा'' है। उद्रधृत गद्यांश उपन्यास के 'चौथे परिच्छेद' से लिया गया है। इस उपन्यास में लेखक ने मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता तथा प्रेम और वासना के भेद की समस्या को वर्णित किया है।

प्रसंग :

यह प्रसंग उपन्यास के 'चौथे परिच्छेद' से उद्‌धृत है। इस परिच्छेद में रात्रि के समय का वर्णन है। रात्रि के समय चित्रलेखा और बीजगुप्त, कुमारगिरि के आश्रम में रुकने के उद्देश्य से पहुंचते हैं, वहां पहुंचकर चित्रलेखा और कुमारगिरि के बीच जो वार्तालाप होता है यह अवतरण उसी से सम्बध्द है। उक्त बातें चित्रलेखा कुमारगिरि को संबोधित करते हुए कह रही है।

व्याख्या :

रात्रि का समय था, बीजगुप्त और चित्रलेखा कुमारगिरि की कुटि पर पहुंचे। कुमारगिरि ने स्वागत किया। फिर वहाँ उपस्थित लोगों का वार्तालाप शुरू हुआ। कुमारगिरि ने समाज के प्रति विरक्त थे और चित्रलेखा समाज, ऐश्वर्य, भोग-विलास के पक्ष में अपने तर्क दे रही थी। कुमारगिरि को स्त्री से संकोच था वह स्त्री को मोह, माया और वासना समझता था। उसके अनुसार ज्ञान आलोकमय संसार में स्त्री का कोई स्थान नहीं। यह सब बातें चित्रलेखा आश्चर्य तथा कौतुहल के साथ सुन रही थी। चित्रलेखा ने कहा योगी शांति अकर्मण्यता का दूसरा नाम है और रहा सुख, उस की परिभाषा एक नहीं।

कुमारगिरि एक नर्तकी के मुख से इस तरह विचार सुनकर स्तब्ध रह गए। उसने कहा कि तुम्हें अभी ज्ञात नहीं है कि सुख क्या है। सुख वह है, ''जब मनुष्य अपनी समाज के प्रति भावना और मोह-माया, ऐश्वर्य, वासना को त्याग कर परमात्मा में विलीन हो जाए।'' तब वह संसार से बहुत ऊपर उठ चुका होगा। उसे दुख का कोई भय न होगा। चित्रलेखा ने कहा ईश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया है, ईश्वर ने जन्म देते ही मनुष्य का कार्यक्षेत्र निर्धारित कर दिया है। उसने मनुष्य को इसलिए जन्म दिया है कि वह संसार में आकर कर्म करे, जो भी दुख, कठिनाई या बाधा आए उससे मुख ना मोड़े! और सुख तृप्ति का दूसरा नाम है और मनुष्य की आत्मा वहाँ ही तृप्ति पाती है, जहां इच्छा होगी, वासना होगी।

चित्रलेखा का मानना है कि सांसारिक मोहमाया से कोई भी व्यक्ति बच नही सकता। यह जीवन भौतिक संसाधनों की तरह भोगने की वास्तु है। इससे छोड़ कर भागना एक प्रकार की कायरता है, प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन है और इन्हें त्यागने वाला व्यक्ति कभी शांत नहीं रह सकता। क्योंकि संसार का हर एक आदमी सुख चाहता है और सुख वहीं होता है जहां इच्छा है। वास्तव में इच्छाओं की पूर्ति का दूसरा नाम ही सुख है। इसलिए जीवन में कामनाओं का होना आवश्यक है।

विशेष:

चित्रलेखा की दार्शनिकता उभर कर सामने आई है। इस प्रसंग द्वारा लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समाज का त्याग करके सुख की प्राप्ति नही होती है। समाज में रहकर सभी चीजों का भोग-विलास करके ही तृप्ति प्राप्त होती है। प्रसंग में रात्रि का समय है। जंगल के दृश्य का वर्णन है। दीपक टिमटिमा रहे हैं।

अवतरण - ३

''संभवतः यद्यपि मनुष्य में गुप्त भेदों का होना उसकी दूषित प्रवृत्ति का द्योतक है। मनुष्य अपनी बातें गुप्त इसलिए रखता है वह भय खाता है कि कहीं समाज यदि उन बातों को जान जाए, तो उसकी समालोचना न करे, या उसको बुरा ना कहे।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश 'प्रथम वर्ष कला' के पाठ्यपुस्तक में निर्धारित उपन्यास ''चित्रलेखा'' से लिया गया है। इसके उपन्यासकार ''भगवतीचरण वर्मा'' है। उद्धृत गद्यांश उपन्यास के 'पन्द्रहवें परिच्छेद' से लिया गया है। इस उपन्यास में 'पाप क्या है?' इसकी खोज में प्रेम और वासना के भेद की समस्या को वर्णित किया है।

प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश में 'पन्द्रहवें परिच्छेद' से उद्धृत हुआ है। इस प्रसंग में काशी दर्शन के लिए प्रस्थान कर रहे बीजगुप्त से संग 'यशोधरा' के एक स्थान पर ठहरने के बाद प्रकृति को देखकर किए गए वार्तालाप का वर्णन है।

munotes.in

व्याख्या :

बीजगुप्त चित्रलेखा के चले जाने के बाद अत्याधिक दुखी हैं। उन्होंने ''काशी दर्शन'' का निश्चय किया। परंतु श्वेतांक के द्वारा यशोधरा को इस बात की सूचना प्राप्त हुई तो वह भी अपने पिता के संग काशी-दर्शन के लिए जाने की तैयारी की, वह सब यात्रा करते रहे रात्रि हो चुकी थी, परंतु बीजगुप्त स्वयं में खोए हुए थे। श्वेतांक ने अनुमति ली, कि कहीं विश्राम किया जाए। वहां एक ''वाटिका'' भी थी साथ ही एक विशाल भवन भी था।

सभी वहाँ ठहरे परंतु बीजगुप्त के मन में चित्रलेखा को भूलने का प्रयास जारी था। वह सभी से दूर भाग रहा था, परंतु 'यशोधरा' स्वयं उसके समीप आ गई है। बीजगुप्त के मन में एक युध्द चल रहा था। कुछ समय पश्चात सूर्य निकला, बीजगुप्त वाटिका की ओर गए वहां ''यशोधरा'' को पाया वह प्रकृति का बड़े ध्यान से निरिक्षण कर रही थी। बीजगुप्त ने कहा देवी! आप क्या देख रही है? मुझे तो प्रकृति में कोई सुंदरता नहीं दिखाई देती। यशोधरा को आश्चर्य हुआ।

यशोधरा ने कहा मुझे इस दुर्वे पर बैठने का मन करता है। महलों से ज्यादा सुख, शांति प्रकृति में है, मैं अगर चिड़िया होती तो खुले आसमान में उड़ती। बीजगुप्त ने कहा देवी! दुर्वे में भी कितने जहरीले नाग है चिड़ियों को भी सुरक्षा नहीं है, प्रकृति में बहुत खतरा है, हम मनुष्य सुरक्षित हैं।

यशोधरा ने कहा आप दुखी लग रहे हैं, बीजगुप्त ने कहा लोग अपनी बातों को गुप्त रखते हैं ताकि समाज उसे बुरा ना समझे परंतु मुझे उसका कोई भय नहीं, बस मैं अपने दुख से किसी अन्य व्यक्ति को दुखी नहीं करना चाहता। इतना कहकर बीजगुप्त चले गए। लोगों में बात होने लगी 'मृत्युंजय' ने श्वेतांक से इसका कारण पूछा तो यशोधरा ने कहा बीजगुप्त खुली पुस्तक की भांति है, उनके मन में कुछ नहीं, ना तो वह कुछ गुप्त रखना चाहते हैं। वह समाज से कुछ नहीं छुपाते, परंतु वह अभी जिस अवस्था में है उसका प्रभाव अन्य किसी पर ना हो इसलिए वह इस विषय को गुप्त रख रहे हैं। और ''मनुष्य में गुप्त भेदों का होना उसकी कलुषित प्रवृत्ति का घातक है।'' परंतु बीजगुप्त सरल और खुले स्वभाव के व्यक्ति हैं।

विशेष :

इस प्रसंग में लेखक ने अतिसुंदर प्रकृति का वर्णन किया है, तथा बीजगुप्त के मन में चल रहे द्वंद्व को दर्शाया है। इस प्रसंग में काशी नगरी तथा मार्ग में पड़ने वाली वाटिका, वन, भवन इत्यादि का वर्णन है।

अवतरण - ४

''नहीं मेरे जीवन की कोई बात गुप्त नहीं है। गुप्त वे बातें रखी जाती हैं, जो अनुचित होती हैं। गुप्त रखना भय का द्योतक है, और भयभीत होना मनुष्य के अपराधी होने का द्योतक है। मैं जो करता हूँ उसे उचित समझता हूँ, इसलिए उसे कभी गुप्त नहीं रखता। कारण मैं तुम्हे इसलिए नहीं बतलाना चाहता था कि अपने दुःख से दूसरों को दुखी करना अनुचित है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश 'बी.ए. प्रथम वर्ष कला' के पाठ्यपुस्तक में लिखित उपन्यास ''चित्रलेखा'' से लिया गया है। इसके उपन्यासकार ''भगवतीचरण वर्मा'' जी हैं। इस उपन्यास में लेखक ने मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता तथा प्रेम और वासना के भेद की समस्या को वर्णित किया है।

प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश में बीजगुप्त और चित्रलेखा के प्रेम संबंध के बारे में वर्णन किया गया है। बीजगुप्त, यशोधरा से अपने और चित्रलेखा के बारे में नहीं बताना चाहता है। वह चित्रलेखा से वास्तविक प्रेम करता है और उसके कहने पर ही वह एक-दूसरे से दूर है जिससे (चित्रलेखा) वह दुःखी है। इसलिए वह अपने दुःख से उसे दुःखी नहीं करना चाहता है।

व्याख्या :

बीजगुप्त चित्रलेखा के चले जाने से निराश है। उसकी निराशा यशोधरा को चिंतित बना देती है। वह सोचती है कि बीजगुप्त सुंदर नगर काशी में आए फिर भी खुश नहीं है। इनके दुःखी होने का कारण क्या है? उससे रहा नहीं जाता है। वह उसके दुःख का कारण जानना चाहती है। बीजगुप्त, यशोधरा से यह कहता है कि नहीं मेरे जीवन की कोई बात छुपी नहीं है। छिपायी वे बात हैं; जो उचित ना हो। किसी बात को छुपाए रखना डर का द्योतक है, और भयभीत होना मनुष्य के अपराधी होने का द्योतक है। अर्थात बीजगुप्त के कहने का तात्पर्य था कि वह चित्रलेखा से प्रेम करता है और यह बात उसने सभा में सबके सामने रखी है तो इसमें गुप्त रखने जैसा कुछ भी न था। लेकिन वह सोच रहा था कि यदि यशोधरा को ज्ञात होगा कि वह चित्रलेखा से प्रेम के कारण उससे विवाह नहीं कर सकता, तो शायद यशोधरा भी दुःखी हो जाएगी।

बीजगुप्त का कहना था कि वह जो कुछ भी करता है उसे उचित समझना है, इसलिए वह वे बातें गुप्त नहीं रखता। कारण बस इतना था, वह यशोधरा को इसलिए नहीं बताना चाहता था कि अपने दुःख से दूसरों को दुःखी करना ठीक नहीं है। बीजगुप्त नहीं चाहते थे कि उसका दुःख जानकर अन्य व्यक्ति भी दुःखी हो।

यह सब जानकर यशोधरा को ऐसा प्रतीत होता है कि यदि इस विषय में उसने और बातें छेड़ी तो इससे बीजगुप्त और ही दुःखी होंगे। इसलिए वह चुप हो जाती है।

विशेष :

यहाँ बीजगुप्त के चरित्र की निडरता और स्पष्टवादिता खुलकर दिखाई देती है। गद्यावतरण में इस विषय पर बल दिया गया है कि यदि मनुष्य अपने जीवन में कोई कटु सत्य गुप्त रखता है, तो वह भयभीत रहता है। कथा में प्रवाहमयता है। भाषा-संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली हैं।

munotes.in

अवतरण – ५

''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनः प्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है– प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर अभिनय करने आता है। अपनी मनः प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दुहराता है– यही मनुष्य का जीवन है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश 'बी.ए. प्रथम वर्ष कला' के पाठ्यपुस्तक में लिखित उपन्यास ''चित्रलेखा'' से लिया गया है। इसके उपन्यासकार ''भगवतीचरण वर्मा'' जी है। लेखक ने मनुष्य की मनःप्रवृत्ति के बारे में वर्णन किया है। व्यक्ति परिस्थिति अनुसार अपना अभिनय करता है। मनुष्य स्वयं का मालिक नहीं होता बल्कि वह परिस्थिति का गुलाम होता है।

प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि पाप और पुण्य कोई सोच समझकर नहीं करता है। मनुष्य केवल वही करता है जो उसे करना पड़ता है अर्थात ना वह पाप करता है और ना ही पुण्य। इसलिए संसार में पाप की कोई परिभाषा नहीं है। उक्त बातें रत्नाम्बर द्वारा श्वेतांक और विशालदेव से उस समय कही जा रही हैं जब वे दोनों अपने एक वर्ष का समय पाप के ढूँढने में अपने-अपने अनुभव लेकर पुनः आते हैं।

व्याख्या :

रत्नाम्बर ने जब श्वेतांक और विशालदेव से आपके बारे में पूछा तो दोनों की पाप की धारणाएं अलग-अलग थी। क्योंकि वे दोनों अलग-अलग परिस्थितियों में रह रहे थे। महाप्रभु रत्नाम्बर ने उन्हें अंतिम पाठ सिखाते हुए कहा कि संसार मैं पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के सोच की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनः प्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है– प्रत्येक व्यक्ति इस संसार रूपी रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनः प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है– यही मनुष्य का जीवन है। कहने का यह तात्पर्य है कि मनुष्य जो कुछ करता है वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है। और स्वभाव प्राकृतिक है अर्थात प्रकृति मनुष्य के मस्तिष्क में जैसे स्वभाव की रचना की है वह ठीक उसी प्रकार अपना कार्य करता है। वह स्वयं का स्वामी नहीं है बल्कि वह परिस्थिति का दास है। परिस्थिति मनुष्य से जैसा करवाती है वह उसके अनुकूल अपना जीवन जीता है। मनुष्य विवश है उसे परिस्थिति के समक्ष झुकना ही पड़ता है। वह कर्ता नहीं है केवल साधन है। वह संसार में केवल साधन मात्र है, जिस प्रकार से वह उपयोग लाया जा सके उसे उसी प्रकार संसार में प्रस्तुत होना पड़ता है।

लेखक कहते हैं कि इसमें पुण्य और पाप कैसा? परिस्थितियों में पुण्य और पाप की जगह नहीं है। मनुष्य यह सोचकर कार्य नहीं करता कि वह पाप कर रहा है। हर व्यक्ति सुख चाहता है। सुख के केंद्र अलग-अलग होते हैं। कुछ व्यक्ति सुख को धन में ढूंढते हैं, कुछ सुख को मदिरा में देखते हैं और कुछ सुख को त्याग में देखते हैं। लेकिन संसार में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का एक मात्र लक्ष्य होता है सुख प्राप्त करना। कोई भी नहीं चाहेगा कि उसके किसी काम से किसी को कोई दुःख पहुंचे। यहाँ रत्नाम्बर अपने दोनों शिष्यों को यह बताना चाहते हैं कि हर व्यक्ति परिस्थितियों का दास होता है। लोग जिस परिवेश में रहते हैं उसी के अनुसार उचित-अनुचित, पाप-पुण्य का निर्धारण भी करते हैं। यही कारण है कि यहाँ श्वेतांक कुमारगिरि को पतित कहता है और विशालदेव बीजगुप्त को पतित कहता है। परिस्थितियों के अनुसार ही पाप और पुण्य की परिभाषा भी गढ़ी जाती है।

विशेष :

१. लेखक ने पाप और पुण्य के निर्धारण में मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता पर बल दिया है।

२. मानव जीवन के निर्धारण में परिस्थितियों को महत्त्वपूर्ण माना गया है।

३. अवतरण की भाषा-संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।

८.७ दिर्घोत्तरी प्रश्न :

१. चित्रलेखा उपन्यास में 'बीजगुप्त' द्वारा किये गये त्याग पर प्रकाश डालिए।

२. 'मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है' चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

३. चित्रलेखा के चित्त की अस्थिरता बीजगुप्त और चित्रलेखा दोनों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है?

४. योगी कुमारगिरि के चरित्र पर प्रकाश डालिए?

५. चित्रलेखा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

६. चित्रलेखा उपन्यास की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

८.८ लघुत्तरीय प्रश्न :

१. किस दुखद घटना ने चित्रलेखा को नर्तकी के पास पर पहुँचा दिया?

उत्तर : कृष्णादित्य की आत्महत्या और नवजात बेटे की मृत्यु ने चित्रलेखा को नर्तकी के द्वार तक पहुँचा दिया।

२. बीजगुप्त कौन है?

उत्तर : बीजगुप्त पाटलीपुत्र का अमीर सामंत है।

munotes.in

३. कुमारगिरि कौन है? और वह किसमें विश्वास रखता है?

उत्तर : कुमारगिरि एक योगी है और वह नियम और संयम में विश्वास रखता है।

४. श्वेतांक और विशालदेव कौन है?

उत्तर : श्वेतांक और विशालदेव महाप्रभु रत्नाम्बर के शिष्य हैं।

५. श्वेतांक और विशालदेव किस प्रश्न का उत्तर ढूंढने निकलते हैं।

उत्तर : श्वेतांक और विशालदेव संसार में पाप क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने निकलते हैं।

६. चित्रलेखा किसे अपना छोटा भाई कहती है?

उत्तर : चित्रलेखा अपना छोटा भाई श्वेतांक को मानती है।

७. मृत्युंजय अपनी बेटी का विवाह श्वेतांक से क्यों नहीं करना चाहते थे?

उत्तर : श्वेतांक धनहीन था इसलिए मृत्युंजय अपनी बेटी का विवाह उससे नहीं करना चाहते थे।

८. आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय कौन थे?

उत्तर : आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय यशोधरा के पिता और पाटलीपुत्र के वयोवृध्द सामंत थे।

९. बीजगुप्त और यशोधरा कहाँ की यात्रा पर गये?

उत्तर : बीजगुप्त और यशोधरा वाराणसी की यात्रा पर गये।

१०. कुमारगिरि को किसने पराजित किया?

उत्तर : कुमारगिरि को चन्द्रगुप्त के महल में चित्रलेखा ने पराजित किया।

११. बीजगुप्त ने अकारण किस का अपमान किया था?

उत्तर : बीजगुप्त ने अकारण ही ''मृत्युंजय'' का अपमान किया था।

१२. श्वेतांक किससे विवाह करना चाहता था?

उत्तर : श्वेतांक 'यशोधरा' से विवाह करना चाहता था।

१३. श्वेतांक के पिता का क्या नाम था?

उत्तर : श्वेतांक के पिता का नाम ''विश्वपति'' था।

१४. महाप्रभु रत्नाम्बर का पहला निवास स्थान क्या था?

उत्तर : महाप्रभु रत्नाम्बर का पहला निवास स्थान 'काशी' में ही था।

१५. ''आत्मा का संबंध अनादि नहीं है बीजगुप्त!'' किसका कथन है?

उत्तर : ''आत्मा का संबंध अनादि नहीं है बीजगुप्त!'' यह कथन 'चित्रलेखा' का हैं।

१६. चित्रलेखा कहां और किससे दिक्षित होने गई थी?

उत्तर : चित्रलेखा, कुमारगिरि के आश्रम में कुमारगिरि से दीक्षित होने गयी थी।

munotes.in

१७. बीजगुप्त यशोधरा से विवाह क्यों नहीं करना चाहता था?

उत्तर : बीजगुप्त चित्रलेखा से प्रेम करता था, उसे ही अपनी पत्नी मानता था इसलिए वह यशोधरा से विवाह नहीं करना चाहता था।

१८. ''मेरे भी पंख होते और मैं कपोती होती'' किसका कथन है?

उत्तर : ''मेरे भी पंख होते और मैं कपोती होती''- ''यशोधरा'' का कथन है?

१९. विशालदेव कहाँ बैठकर आराधना करता था?

उत्तर : विशालदेव अपने आश्रम में ''वट-वृक्ष'' के नीचे बैठ कर आराधना करता था।

२०. योगी कुमारगिरि किससे प्रेम करने लगे?

उत्तर : योगी कुमारगिरि ''चित्रलेखा'' प्रेम करने लगे।

२१. भगवती चरण वर्मा के पहले उपन्यास का नाम बताइए।

उत्तर : भगवतीचरण वर्मा का पहले उपन्यास का नाम 'पतन' है।

२२. बीजगुप्त और चित्रलेखा किस रूप में राज्य से निकलते हैं?

उत्तर : बीजगुप्त और चित्रलेखा भिखारी के रूप में राज्य से निकलते हैं।

२३. चित्रलेखा किस उम्र में विधवा हो गई थी?

उत्तर : चित्रलेखा मात्र अठारह वर्ष की उम्र विधवा हो गई थी।

२४. उपन्यास के अंत में चित्रलेखा किसे प्राप्त होती है ?

उत्तर : चित्रलेखा अंततः बीजगुप्त को प्राप्त होती है।

२५. मृत्युंजय अपनी संपत्ति किसे देने वाले थे।

उत्तर : मृत्युंजय अपनी सम्पूर्ण संपत्ति अपने दत्तक पुत्र को देने वाले थे।

munotes.in

नमूना प्रश्नपत्र

बी.ए. प्रथम वर्ष — हिंदी (ऐच्छिक)

समय : ३ घंटे

कुल अंक : १००

१. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ—सहित व्याख्या कीजिए। २४

क) "जो लोग बाहर विशुद्ध खद्दरदारी होते हैं वे भी विदेशी रेशम के थान ख़रीदकर रखते हैं, इसी से तो देश की उन्नति नहीं होती — तब मैं बड़े कष्ट से हँसी रोक सकी।"

अथवा

"अखबारों में शोर हुआ कि चने में इल्ली लग गई है और सरकार सो रहीं है वगैरह।"

ख) "संसार में इसीलिए पाप की परिभाषा नहीं हो सकी — और न हो सकती है। हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं, जो हमें करना पड़ता।"

अथवा

"संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण का दूसरा नाम है।"

२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। ३०

ग) 'भोर का तारा' एकांकी का सारांश को स्पष्ट कीजिए?

अथवा

'अस्थियों के अक्षर' संस्मरण का सारांश को अपने शब्दों में लिखिए?

घ) 'चित्रलेखा' उपन्यास में 'बीजगुप्त' द्वारा किये गये त्याग पर प्रकाश डालिए?

अथवा

चित्रलेखा का चरित्र—चित्रण कीजिए?

३. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। १५

च) 'जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

छ) 'चित्रलेखा' उपन्यास की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

munotes.in

४. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए। १६

ज) चीनी फेरीवाला

अथवा

ब्रसेल्स की विशेषताएँ

झ) कुमारगिरी

अथवा

'बीजगुप्त' का त्याग।

५. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए। १५

च) चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र किसने लिखा?

छ) चीनी की माँ की मृत्यु कब हुई?

ज) चने क्या होते हैं?

झ) शेखर का दोस्त कौन है?

ट) किस संस्था ने अकाल में मदद की?

थ) आत्मकथ्य में कहाँ का चित्रण हैं?

प) किसका विकास जीवन का परमोददेश्य हैं?

फ) कौन कुँवारे थे?

र) भगवतीचरण वर्मा का जन्म कहाँ हुआ?

स) चित्रलेखा उपन्यास की प्रमुख नायिका कौन हैं?

त) कुमारगिरि आश्रम में कौन चला जाता है?

व) बीजगुप्त किसे प्रेम करते हैं?

म) यशोधरा किस उपन्यास की पात्र है?

उ) चित्रलेखा किसे अपना छोटा भाई कहती है?

ऊ) आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय कौन थे?

munotes.in